श्री बाहुबली भगवान,श्री श्रवणबेलगोला जी

RNI-MAHBIL/2010/33592

जैन तीर्थवंदना

श्री ऊर्जयंत गिरनारजी

वर्ष : 16	अंक : 5	मुम्बई, अगस्त 2026	पृष्ठ : 32	मूल्य : ₹ 25	हिन्दी
VOLUME : 16	ISSUE : 5	MUMBAI, AUGUST 2026	PAGES : 32	PRICE : ₹ 25	English Monthly

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का मुखपत्र

जैन तीर्थवंदना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र ट्रस्ट का

मुखपत्र

वर्ष 16 अंक 5 अगस्त 2026

संपादक मंडल

प्रधान संपादक
डॉ. अनुपम जैन, इंदौर

संपादकीय सलाहकार
डॉ. वीरसागर जैन, दिल्ली
डॉ. अनेकांत जैन, दिल्ली
श्री राजेन्द्र जैन महावीर, सनावद
डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

कार्यालय
भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी
हीराबाग, सी.पी.टैंक, मुंबई 400 004.
फोन :

E-mail : tirthvandana4@gmail.com
Website : tirthkshetracommittee.com

'भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' को प्रेषित की जाने वाली राशि बैंक ऑफ बड़ौदा, वी.पी.रोड, मुंबई के सेविंग खाता नं.13100100008770 अथवा बैंक ऑफ इंडिया, सी.पी.टैंक, मुंबई के सेविंग खाता नंबर 001210110008627 में किसी भी शाखा में नि:शुल्क जमा कराकर उसकी सूचना मुंबई कार्यालय को देने की कृपा करें.

मूल्य

वार्षिक	:	300 रुपये
त्रिवार्षिक	:	800 रुपये
आजीवन (दस वर्ष)	:	2500 रुपये

विज्ञापन आमंत्रित हैं.

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं. सम्पादक का इन विचारों से सहमत होना जरूरी नहीं है।

वीर निर्वाण संवत् 2552

चातुर्मास : श्रमण परम्परा का संयम, करुणा और आत्मजागरण का महापर्व 7

जैन तीर्थों का विकास कैसे हो? 8

इतिहास में जैनों के गौरव और योगदान 9

चातुर्मास का मानव जीवन में महत्त्व 10

धर्म प्रवचन /शास्त्र स्वाध्याय /पाठशाला/ शिविर आदि का प्रचार क्यों जरूरी है ? 11

सिद्ध क्षेत्र गिरनार जी निर्वाण लाडू महोत्सव 2026 13

भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल की टीम ने किया कोटा क्षेत्र का दौरा 15

बैरनपल्ली, तेलंगाना का प्राचीन जिनालय एवं १० वीं सदी की जैन धरोहर 25

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के सदस्य बनकर तीर्थों के संरक्षण-संवर्धन और उनके विकास में मार्ग दर्शन दीजिये

संरक्षक सदस्य	रु. 5,00,000/-	सम्माननीय सदस्य	रु. 31,000/-
परम सम्माननीय सदस्य	रु. 1,00,000/-	आजीवन सदस्य	रु. 11,000/-

नोट:
1) कोई भी फर्म, पेढ़ी, कम्पनी, धर्मादाय ट्रस्ट, संयुक्त कुटुम्ब, सोसायटी भी उपर्युक्त प्रावधान के अंतर्गत सदस्य बन सकेंगे। इस प्रकार की सदस्यता केवल 25 वर्षों के लिये होगी।
2) जो सदस्य आयकर की छूट चाहेंगे उन्हें 80जी के अंतर्गत कुछ रकम पर 80जी का लाभ मिलेगा।
3) सदस्यता से प्राप्त राशि ध्रुवफण्ड में जमा रहेगी उसके ब्याज की आय ही व्यवस्थापन एवं तीर्थक्षेत्र के संरक्षण, संवर्धन तथा उनके जीर्णोद्धार में व्यय की जायेगी।

आगामी जनगणना

आज हम इस पृष्ठ पर २ सामयिक विषयों पर चर्चा करेंगे।

तीर्थरक्षा कलश

इन पृष्ठों पर किये हमारे अनुरोध पर अनेक संतों ने तीर्थ रक्षा कलश की अपने अपने वर्षायोग स्थल पर स्थापना कराई एतदर्थ हम उनके प्रति विनयावनत हैं। समाज की कमेटियों एवं वर्षायोग व्यवस्था/आयोजन समितियों को भी हम सहयोग हेतु धन्यवाद देते हैं। मैंने मुम्बई कार्यालय को निर्देशित कर दिया है कि वे सभी तीर्थरक्षा कलशों की रिपोर्ट जैन तीर्थ वन्दना के इस या आगामी अंक में सचित्र प्रकाशित करें। सम्बद्ध आयोजन समितियाँ प्रत्येक तीर्थ रक्षा कलश के बारे में निम्न विवरण शीघ्र ही मुम्बई कार्यालय को भेज दें। आपने संभवतः भेज दिया होगा, अन्यथा अब भेज देवें।

1- पूज्य संत का नाम

2- वर्षायोग स्थल का नाम एवं पता

3- दातार का नाम, पता एवं फोन नं.

4- घोषित राशि

इससे समेकित विवरण तैयार करने में सुविधा रहेगी। हम पुनः स्मरण करा दें कि यह सम्पूर्ण राशि तीर्थ विकास में ही खर्च होगी।

आगामी जनगणना - विगत दिनों मकानों एवं परिवारों की गणना हुई है। अब जनगणना जनवरी/फरवरी 2027 में सम्पन्न होगी। जनगणना कार्य हेतु जब शासकीय कर्मचारी आपके द्वार पर आये तब: -

1. धर्म के कालम में केवल जैन लिखायें जाति या गोत्र न लिखायें। दिगम्बर या श्वेताम्बर भी लिखाने की आवश्यकता नहीं है।

2. जाति के कालम में अपनी जाति खण्डेलवाल, अग्रवाल, परवार, सराक, चतुर्थ आदि के साथ जैन भी लगायें जैसे खण्डेलवाल जैन, परवार जैन आदि।

3. भाषा के कालम में आपको तीन भाषायें दर्ज करानी हैं: -

प्रथम - जो आपकी मातृभाषा हो हिन्दी, मराठी, गुजराती, मारवाड़ी, कन्नड, तमिल आदि कोई भी।

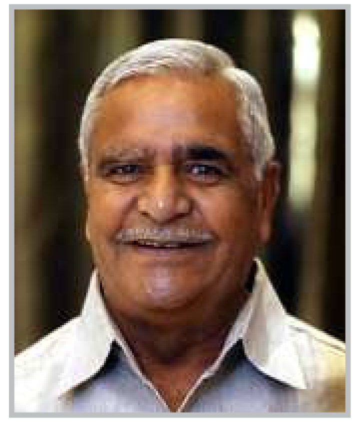

द्वितीय - यदि आपकी मातृभाषा **हिन्दी** हो तो जो अन्य भाषा आप जान या बोल सकते हैं। उसको लिखे जैसे संस्कृत, अंग्रेजी या जो आप बोल सकते हो।

अथवा

यदि आप आपकी मातृभाषा हिन्दी के अलावा मराठी, गुजराती, तमिल, कन्नड आदि कोई हो तो दूसरी भाषा **हिन्दी** लिखे। इस प्रकार प्रथम दो भाषाओं में से एक हिन्दी जरूर हो एवं दूसरी कोई अन्य भाषा।

4. तीसरी भाषा हर जैन को प्राकृत ही लिखानी है। हर जैन णमोकार मंत्र जरूर जानता है। यह प्राकृत में है। समस्त प्राचीन जैन आगमों की भाषा प्राकृत है इसमें शौरसेनी, अर्द्धमागधी का भेद न करें ये सब प्राकृत के ही रूप हैं।

हर जैन को प्राकृत भाषा की रक्षा एवं विकास हेतु तीसरी भाषा प्राकृत ही लिखना है।

सभी पूज्य संतों से अनुरोध है कि इसका पूरे वर्षायोग में प्रचार करे जिससे हमारा समाज जागरूक बने एवं आगामी जनगणना में जैनों की सही संख्या आये।

पुनः स्थापना शतकोत्तर रजत वर्ष की तैयारियाँ जारी रखें एवं आगामी 21 अक्टूबर 2026 को मथुरा चौरासी पधारें। हम अगले अंक में 21–22 अक्टूबर के विस्तृत कार्यक्रम प्रकाशित करेंगे। शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष के शेष कार्यक्रमों की प्रगति भी अच्छी चल रही है। हम समय समय पर आपको सूचित करते रहेंगे।

आपके मथुरा चौरासी आगमन की प्रतीक्षा में।

जम्बूप्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष

समस्त पूज्य आचार्यों, मुनिराजों के चरणों में बारंबार नमोस्तु, आर्यिका माताओं को वंदना एवं सभी बंधुओं-भगनियों को सादर जय जिनेन्द्र!

परमपूज्य आचार्यों, मुनिवरों, आर्यिका माताओं एवं साधु-संतों के पावन सानिध्य में देशभर में चातुर्मास की धर्मगंगा निरंतर प्रवाहित हो रही है। विभिन्न मंदिरों एवं क्षेत्रों पर मंगल कलशों की स्थापना अत्यंत भक्तिभाव व उल्लास के साथ संपन्न हुई है। इस पावन अवसर पर भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से आप सभी को हार्दिक मंगलकामनाएं। परमपिता परमेश्वर से यही प्रार्थना है कि सभी पूज्य मुनिवरों एवं साधना में लीन साधकों का यह चातुर्मास पूर्णतः निर्विघ्न एवं धर्मध्यानपूर्वक संपन्न हो।

जिन-जिन स्थानों पर तीर्थक्षेत्र कमेटी के **"तीर्थ रक्षा कलश"** एवं मंगल कलश स्थापित किए गए हैं, वहां की प्रबंध समितियों एवं स्थानीय समाज का हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं। साथ ही आप सभी से सविनय अनुरोध है कि जहाँ-जहाँ भी कलश स्थापना हो, वहाँ एक कलश **"तीर्थ रक्षा कलश"** तीर्थों की सुरक्षा हेतु अवश्य स्थापित कराने की कृपा करें।

गिरनार जी निर्वाण महोत्सव एवं अनुमोदना

अत्यंत वंदनीय एवं हर्ष का विषय है कि गत दिनों सिद्धक्षेत्र श्री गिरनार जी पर भगवान श्री नेमिनाथ जी का निर्वाण लाडू महोत्सव अत्यंत भव्यता के साथ संपन्न हुआ। बड़ी संख्या में गिरनार जी पहुँचकर भक्तिभाव से अर्घ्य समर्पित करने वाले समस्त श्रद्धालुओं की मैं भावभीनी अनुमोदना करता हूँ। इस संपूर्ण आयोजन को सुचारू रूप से संपन्न कराने, प्रशासनिक गतिविधियों को कुशलतापूर्वक संभालने तथा व्यवस्थाओं को उत्कृष्ट बनाए रखने के लिए तीर्थक्षेत्र कमेटी के गुजरात अंचल अध्यक्ष **श्री पारस जी बज, समस्त गुजरात अंचल एवं श्री बंडीलाल कारखाना** की तन्मयता व निष्ठा अत्यंत सराहनीय रही; उन्हें कमेटी की ओर से कोटि-कोटि साधुवाद।

अत्यंत हर्ष का विषय है कि इसी माह दिनांक १९ अगस्त को पावन मोक्ष सप्तमी के शुभ अवसर पर शाश्वत तीर्थराज श्री सम्मेद शिखरजी में तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का निर्वाण महोत्सव अत्यंत श्रद्धापूर्वक मनाया जाएगा। जैसा कि आप सभी अवगत हैं, श्री सम्मेद शिखरजी पर तीर्थयात्रियों की सुरक्षा, पहाड़ प्रबंधन, वंदना मार्ग की व्यवस्थाओं तथा मोक्ष सप्तमी के अवसर पर निर्वाण लाडू अर्पण व मीडिया चैनलों द्वारा सीधा प्रसारण जैसी समस्त व्यवस्थाओं का दायित्व तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा निरंतर निष्ठापूर्वक निभाया जाता आ रहा है। हम सभी का परम पुण्य है कि ऐसी पावन एवं महान भूमि की वंदना करने का सौभाग्य हमें प्राप्त हो रहा है। मैं श्री सम्मेदशिखरजी पधारे एवं पधार रहे सभी श्रद्धालुओं का हृदय से स्वागत करता हूँ तथा आप सभी की **सुखद एवं निर्विघ्न वंदना** की मंगल कामना करता हूँ।

शिखरजी की वंदना हेतु पधारने वाले सभी महानुभावों से सादर अपील है कि तीर्थ की पवित्रता, मर्यादा एवं स्वच्छता बनाए रखने में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें। तीर्थों का संरक्षण और सुरक्षा हम सभी का परम कर्तव्य है।

संतोष जैन (पेंढारी)
राष्ट्रीय महामंत्री

आइये! वर्षायोग सार्थक करें

वर्ष 2026 का वर्षायोग प्रारम्भ हो चुका है। 28 जुलाई से 2 अगस्त 26 के मध्य देश के अधिकांश दिगम्बर जैन संतों की वर्षायोग स्थापना हो चुकी। शेष संतों ने भी 9 अगस्त को कलश स्थापना कर ली। वस्तुत: वर्षायोग स्थापना तो श्रावण कृष्ण पंचमी से पहले प्रधानत: आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी (28.07.26) को ही कर ली किन्तु सार्वजनिक समारोह 28 जुलाई, 02 अगस्त या 09 अगस्त को रविवार की सुविधा देखकर किया गया।

वर्षायोग दिगम्बर जैन परम्परा का सबसे बड़ा पर्व है इस अन्तराल में जनकल्याण एवं आत्मकल्याण के अनेक कार्य विभिन्न पर्वों के निमित्त से होते हैं।

लगभग 30 वर्ष पूर्व एक प्रभावी संत ने मुझसे प्रश्नात्मक लहजे में कहा कि अनुपम! वर्षा तो सावन-भादों में होती है फिर 4 माह तक एक स्थान पर रुकने का क्या औचित्य? साधु पर यह बंधन आरोपित करना क्या उचित है?

मैंने विनम्रता से उत्तर दिया अपनी परम्परा में मूलगुणों की समीक्षा का कोई प्रावधान नहीं है। अत: मूलाचार में प्रतिपादित व्यवस्था के अन्तर्गत हमें न्यूनतम श्रावण कृष्ण पंचमी से दीपावली तक 25 + 30 + 30 + 15 = 100 दिन तो वर्षायोग करना ही होगा। सामान्यत: संतगण 120 दिन यानी आषाढ़ कृष्ण चतुर्दशी से कार्तिक अष्टान्हिका यानी कार्तिक माह के अंत तक वर्षायोग करते हैं। नगरों की सीमाओं के अन्दर बिहार की छूट रहती है। बात समाप्त हो गई किन्तु चिन्तन के लिए एक बिन्दु छोड़ गई। क्या वर्षायोग में केवल सूक्ष्म जीवों की रक्षा के भाव से साधु विहार नहीं करते? या इसका अन्य भी कोई महत्त्व है? निश्चय ही सर्वप्रमुख एवं प्रत्यक्ष कारण यही है। किन्तु वर्षायोग के निमित्त से आत्म कल्याण, जनकल्याण एवं संस्कृति संरक्षण के भी अनेक कार्य होते हैं?

वर्षायोग में जैन समाज का सबसे प्रमुख एवं शाश्वत पर्व पर्युषण या दशलक्षण पर्व आता है। जहाँ —जहाँ वर्षायोग हो रहे हैं वहाँ छोटे या बड़े श्रावक संस्कार शिविर या साधना शिविर आयोजित होते है। नाम कुछ भी हो या न भी हो पर्व के दिनों में सम्पूर्ण जैन समाज की दिनचर्या बदल जाती है। भाद्रपद कृष्ण पंचमी से लेकर चतुर्दशी तक। हर व्यक्ति अपनी दिनचर्या में न्यूनतम परिवर्तन कर आत्मचिंतन, धर्माराधन एवं संयम धारण करने का प्रयास करता है। इस वर्ष यह पर्व 15 सितम्बर से 25 सितम्बर तक मनाया जा रहा है। वर्तमान जीवन पद्धति एवं प्रतिस्पर्धात्मक युग में व्यक्ति के जीवन में तनाव, अवसाद आदि के अनेक कारण प्रमुखता से हैं ऐसे में मानसिक शांति तनावों को कम करना शरीर की शुद्धि, शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को संतुलित करने का एक सुअवसर पर्युषण पर्व है। आयुर्वेद की दृष्टि से वर्षाकाल में पाचन तंत्र शिथिल रहता है नमी से बैक्टीरिया, फंगस आदि प्रचुर मात्रा में होते हैं। अतः संतुलित, सुपाच्य, शुद्ध, अल्प मात्रा में भोजन, एकासन, उपवास आदि करने से शरीर को आराम मिलता है। शरीर में एकत्र विजातीय द्रव्यों का शोधन होता है। संतों के पादमूल में बैठकर धर्म चर्चायें करने से संचित तनाव कम होते हैं। आत्म विश्वास जागृत होता है। नई ऊर्जा के साथ कार्य में प्रवृत्त होने की प्रेरणा मिलती है। क्षमावाणी पर्व भी एक अवसर होता है जब हम मन की गॉठे खोल कर परस्पर प्रेम एवं सहयोग के नये युग का सूत्रपात करें। फलतः वर्षायोग हमारे जीवन की धारा को बदल कर नये रूप में चिन्तन/क्रियान्वयन का अवसर देता है। जिससे व्यक्ति अधिक स्वस्थ एवं प्रसन्न अनुभव करता हैं।

वर्षायोग में सतत् विहार आदि की चिन्ताओं से मुक्त रहने के कारण पूज्य संतगण श्रावकों के साथ बैठकर तीर्थों के विकास एवं समाज हित की योजनायें बना पाते हैं। मंडल/विधानों के माध्यम से भक्ति की गंगा तो बहती ही है। उसमें गरीब-अमीर सभी आचमन करते हैं।

सुधासागर पेड़ी : इस वर्षायोग में मैं इन्दौर नगर के ही 2-3 कार्यों का उल्लेख करना चाहूँगा। यहाँ पूज्य मुनिपुंगव श्री सुधासागर जी महाराज का छत्रपति नगर कॉलोनी में वर्षायोग होने के कारण एक श्रावक श्री संजय पाटोदी ने सुधासागर पेड़ी की घोषणा की। समाज के कुछ बन्धुओं के पास उपलब्ध (अतिरिक्त) धन का उपयोग समाज के

जरूरत मंदों को न्यूनतम ब्याज पर धन उपलब्ध कराने में हो सकेगा। उनकी पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आवश्यकतानुसार न्यूनतम ब्याज दरों पर बिना झंझटों के शीघ्र धन प्राप्त हो सकेगा। यह समाज की बड़ी सेवा होगी।

प्राकृत सर्टिफिकेट कोर्स की लॉन्चिंग :

सरकार ने 2 वर्ष पूर्व प्राकृत को शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिया था। हमें विश्वास था कि शासन प्राकृत अकादमी, या प्राकृत विश्वविद्यालय की स्थापना करेगी किन्तु अब तक इस दिशा में कोई प्रगति नहीं हुई। किन्तु भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन भारतीय ज्ञान परम्परा (IKS) विभाग द्वारा Online Prakrit Certificate Course प्रारम्भ किया जा रहा है। इसका शुभारम्भ आचार्य श्री सुनीलसागर जी महाराज ससंघ के पावन सानिध्य में गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर इन्दौर में किया गया। ज्ञातव्य है कि इन्दौर में IKS Centre in Jain Mathematics देवी अहिल्या विश्वविद्यालय में कार्यरत है। फलतः सक्रिय पहल एवं सहभागिता में इस पाठ्यक्रम का इन्दौर में प्रो. जी. एस. मूर्ति, राष्ट्रीय समन्वयक द्वारा शुभारम्भ कराया जा सका। मैंने इस कार्य की संकल्पना, उद्देश्य, आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डाला एवं बताया कि प्राकृत भाषा को जाने एवं सीखे बिना जैन संस्कृति एवं भारतीय ज्ञान परम्परा को समझना असंभव है। संयोजक डॉ. पारस जैन ने विस्तार पूर्वक कोर्स की रूपरेखा बताई एवं कहा कि सप्ताह में 3 दिन चलने वाली कक्षाओं में अध्यापन हेतु देशभर से विशेषज्ञों को चिन्हित किया गया है। 6 माह के इस कोर्स को उच्च तकनीक एवं विषय विशेषज्ञों के ज्ञान को समाहित कर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संचालित किया जायेगा। प्रतिमाह स्पेशल लेक्चर भी कराये जायेंगे। प्रो. मूर्ति ने गुरु चरण वन्दना के उपरान्त अपने उद्बोधन में कहा कि आई के एस को अपने लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु गुरुओं का मार्गदर्शन जरूरी है। इसीलिए हम गुरु पूर्णिमा के अवसर पर भारत की इस प्राचीन भाषा के पाठ्यक्रम हेतु गुरु चरणों में आये हैं। मेरे साथ विभाग में डॉ. पारस जी इसका संयोजन कर रहे है एवं प्रो. अनुपम जैन जी अपना मार्गदर्शन दे रहे हैं। आपने समाज से इस निःशुल्क किन्तु गुणवत्तापूर्ण पाठ्यक्रम का लाभ लेने का अनुरोध किया। आपने कहा कि पोस्टर पर छपे QR कोड से सहज ही पंजीयन हो सकता है। भारतीय ज्ञान परम्परा विभाग Indan Knowledge System Division Ministry of Education, Govt. of India द्वारा इसका संचालन होगा। पूज्य आचार्य श्री ने शुभारम्भ प्राकृत भाषा के मंगलाचरण से करने के बाद अपने उद्बोधन में कहा कि प्राकृत ने भारत की अनेक भाषाओं को समृद्ध किया है। हिन्दी की तो वह दादी है। क्योंकि प्राकृत से अपभ्रंश एवं अपभ्रंश से हिन्दी

विकसित हुई है। हिन्दी में सैकड़ों प्राकृत के शब्दों का हम रोज उपयोग करते हैं किन्तु जानते नहीं हैं। प्राचीन भारतीय भाषाओं एवं भारतीय ज्ञान परम्परा को ठीक से आत्मसात करने हेतु प्राकृत का ज्ञान आवश्यक है। इस श्रेष्ठ पहल हेतु आपने प्रो. मूर्ति एवं उनकी पूरी टीम को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

प्रो. मूर्ति ने अपने विभाग द्वारा प्रकाशित जैन गणित संदर्भ ग्रंथ की प्रति पूज्य आचार्य श्री को भेंट की। आचार्य श्री ने कृति के लेखक प्रो. अनुपम जैन एवं प्रकाशक को अपना शुभाशीष भी दिया। आचार्य श्री द्वारा **प्राकृत साहित्य में गणित** शीर्षक कृति के सृजन की प्रेरणा देने पर प्रो. अनुपम जैन ने गुरु आज्ञा मानकर यह दायित्व स्वीकार किया तथा प्रो. मूर्ति ने सरकार से इस कृति के प्रकाशन की अग्रिम सैद्धांतिक सहमति प्रदान की। आपने कहा कि इस कोर्स की सफलता पूर्वक पूर्णता पर हम डिप्लोमा आदि उच्चस्तरीय पाठ्यक्रम प्रारंभ करेंगे।

ऐसे अनेक साहित्यिक उपक्रम अनेक अन्य स्थानों पर किए जाएंगे। हम अनुरोध करेंगे कि इस चातुर्मास में भारतीय ज्ञान परम्परा को समृद्ध करने में जैन आचार्यों के योगदान को प्रमुखता से रेखांकित, संकलित एवं प्रस्तुत किया जाये। हमारे पूज्य मनीषी संत एवं विद्वान दोनों इसमें सहभागी हो सकते हैं। अन्य स्थानों पर होने वाले अनुकरणीय कार्यों की जानकारी भेजे।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष में यह जैन संस्कृति की अनूठी सेवा होगी। **जैन तीर्थ वन्दना में प्रकाशनार्थ वर्षायोग के समाचार भी भेजे ताकि इतिहास बनें।**

साधनारत समस्त संतों के चरणों में नमोस्तु सहित।

डॉ. अनुपम जैन,
ज्ञानछाया, डी-14, सुदामानगर, इन्दौर-452 009 (म.प्र.)
मो.: 94250 53822

चातुर्मास : श्रमण परम्परा का संयम, करुणा और आत्मजागरण का महापर्व

- डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

भारतीय संस्कृति का आध्यात्मिक वैभव केवल उसके दार्शनिक सिद्धांतों में ही नहीं, अपितु उन जीवन-पद्धतियों में भी निहित है जिन्होंने मनुष्य को प्रकृति, प्राणीमात्र और अपने अंतर्मन के साथ संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा दी। वैदिक और श्रमण—इन दोनों महान सांस्कृतिक धाराओं ने वर्षा ऋतु को आत्मसंयम, साधना और आध्यात्मिक उन्नयन का श्रेष्ठ अवसर माना है। श्रमण जैन परम्परा में यही काल चातुर्मास अथवा वर्षायोग के रूप में प्रतिष्ठित है, जो केवल चार महीनों का स्थिर निवास नहीं, बल्कि अहिंसा, आत्मशुद्धि, स्वाध्याय और लोककल्याण का विराट आध्यात्मिक अभियान है।

जैन मुनियों का जीवन निरंतर विहार और लोकजागरण का जीवन है। वे किसी स्थान विशेष के नहीं, अपितु समस्त समाज के आध्यात्मिक पथप्रदर्शक होते हैं। ग्राम-ग्राम और नगर-नगर भ्रमण करते हुए वे धर्म, संयम और समता का संदेश देते हैं। किंतु वर्षा ऋतु के आगमन के साथ उनकी यह गतिशीलता विराम लेती है। यह विराम विश्राम का नहीं, बल्कि साधना की गहनता और करुणा की पराकाष्ठा का प्रतीक है। प्रकृति जब नवजीवन से स्पंदित होती है, असंख्य सूक्ष्म जीवों का जन्म होता है और पृथ्वी हरित आच्छादन से भर उठती है, तब अनावश्यक आवागमन से होने वाली जीवहिंसा से बचने के लिए जैनाचार में एक स्थान पर निवास का विधान किया गया है।

वस्तुतः चातुर्मास का मूलाधार केवल धार्मिक अनुशासन नहीं, बल्कि जीवमात्र के प्रति असीम संवेदनशीलता है। जैन दर्शन का मूल सूत्र—"अहिंसा परमो धर्मः"—इस काल में अपने सर्वाधिक व्यावहारिक स्वरूप में दिखाई देता है। वर्षा ऋतु में भूमि, जल, वनस्पति और वातावरण असंख्य सूक्ष्म जीवों से परिपूर्ण हो जाते हैं। ऐसे समय अनावश्यक विहार से असंख्य जीवों की हिंसा की संभावना रहती है। इसलिए संयमी साधु अपने चरणों को रोककर करुणा को गति प्रदान करते हैं।

चातुर्मास का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष आध्यात्मिक साधना है। निरंतर भ्रमणशील रहने वाले मुनिराज इस अवधि में गहन ध्यान, स्वाध्याय, आगम-चिंतन, शास्त्र-मनन तथा आत्मानुशासन में विशेष रूप से प्रवृत्त होते हैं। यह काल उनके लिए आत्मबल की वृद्धि का होता है, वहीं समाज के लिए धर्मोपदेश, शंका-समाधान, संस्कार निर्माण और सदाचार के प्रसार का अनुपम अवसर बन जाता है। यही कारण है कि जैन समाज चातुर्मास की प्रतीक्षा उसी श्रद्धा और उत्साह से करता है, जैसे तप्त धरती मेघों की प्रथम वर्षा की।

चातुर्मास केवल मुनियों की साधना तक सीमित नहीं रहता। यह सम्पूर्ण समाज के नैतिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण का पर्व बन जाता है। पर्युषण-दशलक्षण महापर्व, संवत्सरी, क्षमावाणी, रक्षाबंधन, अष्टान्हिका तथा अनेक धार्मिक अनुष्ठान इसी काल में संपन्न होते हैं। उपवास, स्वाध्याय, दान, संयम, तप, सामायिक, प्रतिक्रमण और क्षमा जैसे जीवन-मूल्य जन-जन के आचरण का अंग बनते हैं। इस प्रकार चातुर्मास समाज को केवल धार्मिक नहीं, बल्कि नैतिक और मानवीय दृष्टि से भी समृद्ध करता है।

जैन आगमों में वर्षावास के लिए स्थान चयन के भी स्पष्ट मानदंड निर्धारित किए गए हैं। ऐसा स्थान जहाँ शांति हो, स्वाध्याय की सुविधा हो, निर्दोष आहार की उपलब्धता हो, साधना में विघ्न न हो तथा जनसमुदाय धर्मश्रवण के लिए अनुकूल हो—उसे चातुर्मास के योग्य माना गया है। इससे स्पष्ट है कि जैनाचार केवल व्यक्तिगत तपस्या का नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व का भी दर्शन है।

यद्यपि सामान्य परिस्थितियों में वर्षावास की अवधि पूर्ण करना आवश्यक माना गया है, तथापि यदि दुर्भिक्ष, महामारी, बाढ़, उपद्रव, संघ की सुरक्षा अथवा आचार्य की सेवा जैसे विशेष कारण उपस्थित हों, तो शास्त्रों ने सीमित अपवादों की भी व्यवस्था की है। इससे जैन परम्परा की व्यवहारिकता और युक्तिसंगत दृष्टि का परिचय मिलता है, जहाँ नियमों का उद्देश्य जीवन की रक्षा और धर्म की मर्यादा है।

आज जब मानव सभ्यता पर्यावरण संकट, हिंसा, असहिष्णुता और मानसिक अशांति जैसी चुनौतियों से जूझ रही है, तब चातुर्मास का संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक प्रतीत होता है। यह हमें सिखाता है कि विकास का वास्तविक अर्थ प्रकृति पर अधिकार नहीं, बल्कि उसके साथ सहअस्तित्व है; धर्म का सार कर्मकाण्ड नहीं, बल्कि संवेदना है; और साधना का उद्देश्य केवल आत्ममोक्ष नहीं, बल्कि समस्त जीवों के प्रति मैत्री और करुणा का विस्तार है।

निस्संदेह, श्रमण जैन परम्परा का चातुर्मास भारतीय आध्यात्मिक चेतना की एक अद्भुत धरोहर है। यह चार महीनों का धार्मिक अनुष्ठान भर नहीं, बल्कि आत्मसंयम, पर्यावरण संरक्षण, जीवदया, ज्ञान-साधना, सामाजिक समरसता और मानवीय मूल्यों के पुनर्स्मरण का महाअभियान है। यदि चातुर्मास के आदर्शों को जीवन में आत्मसात् किया जाए, तो व्यक्ति का चरित्र, समाज का वातावरण और राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना—तीनों अधिक उदात्त, अधिक संवेदनशील और अधिक प्रकाशमान बन सकते हैं।

जैन तीर्थों का विकास कैसे हो?
(आस्था, संस्कृति और समाज के समन्वित उत्थान का मार्ग)

- डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर

भारत की आध्यात्मिक परंपरा में जैन तीर्थ केवल पूजा-अर्चना के केंद्र नहीं हैं, बल्कि वे धर्म, संस्कृति, इतिहास, दर्शन और नैतिक मूल्यों के जीवंत प्रतीक हैं। इन तीर्थों की पवित्र भूमि पर अनगिनत संतों, आचार्यों और तपस्वियों ने आत्मकल्याण का मार्ग प्रशस्त किया है। सम्मेदशिखर, गिरनार, श्रवणबेलगोला, सोनागिरि, हस्तिनापुर, पावापुरी, मुक्तागिरि और अनेक अन्य तीर्थ आज भी श्रद्धालुओं को आत्मशुद्धि एवं आध्यात्मिक उन्नति की प्रेरणा प्रदान करते हैं। किंतु वर्तमान युग की चुनौतियों और बदलते सामाजिक परिवेश में यह प्रश्न अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि जैन तीर्थों का समग्र एवं सतत विकास कैसे हो?

जैन तीर्थों का विकास केवल भव्य भवनों, विशाल धर्मशालाओं अथवा आकर्षक संरचनाओं के निर्माण तक सीमित नहीं होना चाहिए। वास्तविक विकास वह है जो तीर्थों की आध्यात्मिक गरिमा को अक्षुण्ण रखते हुए उन्हें ज्ञान, संस्कृति, सेवा और साधना के केंद्र के रूप में स्थापित करे।

सबसे पहले तीर्थों के मूल उद्देश्य को समझना आवश्यक है। तीर्थ आत्मोत्कर्ष और धर्म साधना के स्थल हैं। अतः तीर्थों में आध्यात्मिक वातावरण की शुद्धता और पवित्रता बनाए रखना विकास का प्रथम आधार होना चाहिए। यदि तीर्थ केवल पर्यटन स्थल बनकर रह जाएँ और वहाँ साधना, स्वाध्याय तथा धर्मचिंतन का वातावरण क्षीण हो जाए, तो उनका मूल स्वरूप प्रभावित हो जाएगा। इसलिए तीर्थों में नियमित प्रवचन, स्वाध्याय शिविर, ध्यान-साधना कार्यक्रम तथा धार्मिक शिक्षण की प्रभावी व्यवस्था होनी चाहिए।

जैन तीर्थों के विकास में शिक्षा का विशेष महत्व है। प्रत्येक प्रमुख तीर्थ पर पुस्तकालय, शोध केंद्र, जैन दर्शन अध्ययन संस्थान तथा डिजिटल ज्ञान केंद्र स्थापित किए जाने चाहिए। आज की युवा पीढ़ी आधुनिक माध्यमों से जुड़ी हुई है। यदि तीर्थों में डिजिटल संग्रहालय, ऑडियो-विज़ुअल गैलरी तथा जैन इतिहास और संस्कृति को प्रदर्शित करने वाली आधुनिक प्रदर्शनियाँ विकसित की जाएँ, तो युवाओं में धर्म के प्रति स्वाभाविक आकर्षण उत्पन्न होगा।

तीर्थों के विकास का एक महत्वपूर्ण पक्ष स्वच्छता और पर्यावरण संरक्षण भी है। जैन धर्म अहिंसा और प्रकृति संरक्षण का संदेश देता है। अतः तीर्थ क्षेत्रों को प्लास्टिक मुक्त, स्वच्छ एवं हरित क्षेत्र के रूप में विकसित किया जाना चाहिए। वृक्षारोपण, जल संरक्षण, सौर ऊर्जा का उपयोग तथा प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित प्रयोग को तीर्थ विकास योजनाओं का अनिवार्य अंग बनाया जाना चाहिए। इससे तीर्थ न केवल सुंदर बनेंगे, बल्कि जैन जीवन-दृष्टि के वास्तविक प्रतीक भी बन सकेंगे।

वर्तमान समय में तीर्थ यात्रियों की सुविधाओं का विस्तार भी आवश्यक है। स्वच्छ धर्मशालाएँ, शुद्ध भोजन व्यवस्था, चिकित्सा सुविधाएँ, वरिष्ठ नागरिकों एवं दिव्यांग श्रद्धालुओं के लिए विशेष प्रबंध, सुरक्षित परिवहन और उचित मार्गदर्शन केंद्र तीर्थ विकास के महत्वपूर्ण आयाम हैं। जब यात्रियों को आवश्यक सुविधाएँ सहज उपलब्ध होंगी, तब उनकी तीर्थयात्रा अधिक सुखद एवं सार्थक बनेगी।

जैन तीर्थों के ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक महत्व के संरक्षण पर भी विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। अनेक प्राचीन प्रतिमाएँ, अभिलेख, मंदिर और स्थापत्य धरोहरें समय के साथ क्षतिग्रस्त हो रही हैं। इनके संरक्षण और वैज्ञानिक अध्ययन हेतु विशेषज्ञों की सहायता ली जानी चाहिए। साथ ही तीर्थों के इतिहास का प्रामाणिक दस्तावेजीकरण कर उसे प्रकाशित और प्रचारित किया जाना चाहिए, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अपनी गौरवशाली विरासत से परिचित हो सकें।

जैन समाज की युवा शक्ति तीर्थ विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। युवाओं को तीर्थों से जोड़ने के लिए स्वयंसेवी कार्यक्रम, सांस्कृतिक आयोजन, व्यक्तित्व विकास शिविर और धार्मिक प्रशिक्षण योजनाएँ संचालित की जानी चाहिए। जब युवा वर्ग तीर्थों को अपना दायित्व समझेगा, तभी विकास की प्रक्रिया निरंतर और जीवंत बनी रहेगी।

इसके अतिरिक्त तीर्थों के प्रबंधन में पारदर्शिता, दूरदर्शिता और समन्वय की भावना भी आवश्यक है। विभिन्न संस्थाओं, ट्रस्टों और समाज के सक्रिय सहयोग से दीर्घकालिक विकास

योजनाएँ बनाई जानी चाहिए। तीर्थों के आर्थिक संसाधनों का उपयोग केवल निर्माण कार्यों तक सीमित न रहकर शिक्षा, सेवा, संस्कृति और संरक्षण कार्यों में भी किया जाना चाहिए।

आज सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। इसलिए प्रत्येक प्रमुख तीर्थ की सशक्त डिजिटल उपस्थिति होनी चाहिए। वेबसाइट, मोबाइल एप, वर्चुअल टूर, ऑनलाइन दर्शन, डिजिटल साहित्य और तीर्थ संबंधी जानकारी को आधुनिक तकनीक के माध्यम से विश्वभर के श्रद्धालुओं तक पहुँचाया जा सकता है। इससे तीर्थों का वैश्विक प्रचार-प्रसार होगा और नई पीढ़ी उनसे अधिक निकटता अनुभव करेगी।

अंततः यह समझना होगा कि जैन तीर्थों का विकास केवल भौतिक संसाधनों से नहीं, बल्कि श्रद्धा, समर्पण और दूरदर्शी चिंतन से संभव है। तीर्थों की भव्यता उनके पत्थरों में नहीं, बल्कि वहाँ प्रवाहित होने वाली आध्यात्मिक चेतना में निहित होती है। यदि हम तीर्थों को साधना, सेवा, स्वाध्याय, संस्कृति और पर्यावरण संरक्षण के आदर्श केंद्रों के रूप में विकसित कर सकें, तो वे केवल जैन समाज ही नहीं, सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रेरणा स्रोत बन सकते हैं।

जैन तीर्थ हमारी अमूल्य आध्यात्मिक धरोहर हैं। उनका विकास समय की आवश्यकता भी है और हमारा नैतिक दायित्व भी। आवश्यकता इस बात की है कि विकास की दौड़ में तीर्थों की आत्मा सुरक्षित रहे और आधुनिकता के साथ उनकी आध्यात्मिकता का संतुलन बना रहे। तभी जैन तीर्थ वास्तव में धर्म, संस्कृति और मानव कल्याण के दिव्य केंद्र बन सकेंगे तथा आने वाली पीढ़ियों को सत्य, अहिंसा और आत्मकल्याण का मार्ग दिखाते रहेंगे।

इतिहास में जैनों के गौरव और योगदान

- मानकचंद राठौड़

इतिहास में जैनों के गौरव और योगदान को जानबूझ कर छुपाया गया, ताकि तुम्हें बताया जाए

— तुम सिर्फ व्यापारी हो।सच यह है

— तुमने इस देश की आत्मा बनाई है।

एक कड़वा सवाल

क्या आपके बच्चे की किताब में भामाशाह का नाम है?

क्या लिखा है कि चंद्रगुप्त मौर्य जैन मुनि बनकर गए?

क्या लिखा है कि गांधीजी के आध्यात्मिक गुरु एक जैन संत थे?

क्या लिखा है कि पुर्तगालियों को धूल चटाने वाली एक जैन रानी थी?

नहीं लिखा। यही वह अन्याय है। भामाशाह — जिसने मशाल बुझने नहीं दी। सन् 1578 हल्दीघाटी के बाद महाराणा प्रताप जंगलों में भटक रहे थे। सेना बिखरी थी। बच्चे भूखे थे। तब एक जैन आया। 25 लाख रुपये। 20,000 स्वर्ण अशर्फियाँ। जीवनभर की कमाई — एक झटके में मातृभूमि के चरणों में। महाराणा ने कहा — "यह खजाना तुम्हारा है।"भामाशाह ने कहा — "मैंने तो बस इसे मातृभूमि के लिए सँभाला था।"चेतक ने महाराणा को बचाया। भामाशाह ने मेवाड़ के स्वाभिमान को जिंदा रखा। इतिहास में चेतक का नाम तो है लेकिन जिस भामाशाह के त्याग के बिना महाराणा प्रताप फिर से मेवाड़ को स्वतंत्रता नहीं दिला पाते, उन भामाशाह का नाम नहीं है। रानी अब्बक्का चौटा — पुर्तगालियों का काल 16वीं सदी। पुर्तगाली नौसेना भारत का तट रौंद रही थी। कर्नाटक के छोटे से राज्य उल्लाल की जैन रानी अब्बक्का चौटा अकेली खड़ी हो गई। महल छिन गया — डरीं नहीं। जवाबी हमले में पुर्तगाली सेनापति को मार गिराया।70 सैनिकों को बंदी बनाया। चार दशकों तक दुनिया की सबसे बड़ी नौसैनिक शक्ति को रोके रखा। पुर्तगाली उन्हें "Terrible Queen" कहते थे। हम उन्हें गर्व से याद करते हैं। भारत सरकार ने डाक टिकट जारी किया। स्कूल की किताब में — एक पंक्ति भी नहीं।और भी जो इतिहास ने छुपाया, चंद्रगुप्त मौर्य — अखंड भारत का निर्माता, जो सब कुछ छोड़ जैन मुनि बने और श्रवणबेलगोला में देह त्याग किया। , श्रीमद् राजचंद्र — वह जैन संत जिनके बारे में गांधीजी ने लिखा — "मेरे जीवन पर सर्वाधिक प्रभाव इन्हीं का पड़ा।" सत्याग्रह की जड़ें जैन दर्शन में थीं। जैन मुनि — जब नालंदा जल रहा था, इन्होंने हज़ारों पांडुलिपियाँ पीठ पर उठाकर बचाईं। भारत का ज्ञान आज इन्हीं की वजह से जीवित है। 0.4% जनसंख्या — फिर भी देश की रीढ़ देश का 25% से अधिक आयकर हम भरते हैं।हज़ारों अस्पताल, विद्यालय, गौशालाएँ हमारे दान से चलती हैं। लेकिन केवल दाता बने रहना पर्याप्त नहीं। राजनेताओं के साथ फोटो खिंचवाने से पहचान नहीं बनती। पहचान बनती है जब भामाशाह और अब्बक्का का नाम स्कूल की किताबों में हो। **दाता बने रहे तो इतिहास भूल जाएगा। वक्ता बनो — तो इतिहास याद रखेगा।** *अपने बच्चे को यह बताओ"जब मेवाड़ डूब रहा था — भामाशाह ने थाम लिया। जब पुर्तगाली जीत रहे थे — अब्बक्का ने रोक दिया। जब गांधी को राह चाहिए थी — एक जैन संत ने दिखाई। तुम उन लोगों की संतान हो। गर्व से कहो हम जैन हैं। और आवाज़ भी उठाओ। "हम इतिहास के दर्शक नहीं — निर्माता हैं। और अब चुप रहने का समय नहीं। जय जिनेन्द्र

चातुर्मास का मानव जीवन में महत्त्व

- डॉ नरेन्द्र जैन भारती सनावद

वर्तमान युग की जो आध्यात्मिक शक्तियां हैं, चाहे वह किसी भी धर्म के मानने वालों की हों, वह दिगंबर जैन मुनियों को अत्यंत श्रद्धा और आस्था से देखती हैं। इसका कारण उनके वैराग्यमयी जीवन में त्याग की उत्कृष्ट भावना है। जो व्यक्ति संसार, शरीर और भोगों से विरक्त हो जाते हैं, वे त्याग मार्ग अपनाते हैं।

जैन धर्म त्याग प्रधान धर्म है। दिगंबर जैन मुनि तिल, तुष मात्र भी परिग्रह नहीं रखते। जो परिग्रह रखते हैं, उन्हें व्यक्ति साधु जीवन का सम्मान तो देता है परंतु उनके त्यागमय जीवन की प्रशंसा में संकोच करता है। इसका अर्थ है कि वह व्यक्ति यह मानता है कि दिगंबर मुनिराजों का जीवन ही त्याग की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है उनके पास मात्र तीन उपकरण होते हैं। पीछी, कमण्डलु और शास्त्र। इन तीनों के अलावा कोई भी वस्तु उनके लिए अनुपयोगी है। इसलिए वस्त्र त्याग कर वे तपस्या में रत रहते हैं। ज्ञान, ध्यान और तप में लीन हो जाना उनका स्वभाव बन जाता है। लोक में यह प्रसिद्ध है कि सर्व परिग्रह का त्याग करने वाले साधु ही आत्मज्ञान में लीन रह सकते हैं। संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का यदि भारत वर्ष ही नहीं, विदेशों में बसे समस्त समाज के लोग भी सम्मान करते और श्रद्धा रखते थे तो इसका कारण जिनागम के प्रति अटूट आस्था तथा जिनधर्म के प्रति समर्पण भाव था वे कुगुरु, कुदेव, कुधर्म में विश्वास न रख कर सच्चे देव शास्त्र और गुरुओं में विश्वास रखते थे। उनका विश्वास था कि आत्मा के कल्याण के लिए रत्नत्रय अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र के मार्ग पर चलकर ही हम मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। संपूर्ण बंधनों से मुक्त हो सकते हैं, इसलिए वह पंचमकाल की परवाह न करते हुए सच्चे त्याग मार्ग पर चलते थे चर्या से भी वे सच्चे देव, शास्त्र और गुरुओं के प्रति समर्पित रहे और व्यक्ति उनके आशीर्वाद को जीवन की सबसे बड़ी सफलता बताते रहे। आज भी कई साधु ऐसे है जो अनेक लोगों को त्याग मार्ग पर लगाकर जिनधर्म के अनुरूप बना रहे हैं। साधुगण जैन धर्म में वर्णित चातुर्मास के अनुरूप कार्य करें। जीवों की विराधना और हिंसा से बचें, यह सभी के लिए उचित है।

इस वर्ष 28 जुलाई से चातुर्मास प्रारंभ हो चुके हैं। पैदल विहार कर आठ माह तक धर्म प्रभावना करने वाले साधुगण एक स्थान पर रहकर चातुर्मास करेंगे। चातुर्मास में व्यक्ति का आचरण धर्मानुरूप बने, अधर्मी , धर्म मार्ग में लगें, त्याग के महत्व को समझें, उनका जीवन सदकार्यों के लिए समर्पित रहे, सच्चे देव, शास्त्र और गुरुओं की व्याख्या पंथवाद में न फंसे, श्रावक द्रव्य पूजा के अंतर्गत अष्ट द्रव्य से पूजा करें तथा साधु भाव पूजा ही करें, इसी का प्रचार धर्म सम्मत है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की प्रतिष्ठा को धूमिल करने के लिए चातुर्मास में बनाये गये मंचों का उपयोग न करें ऐसी भावना सभी की होनी चाहिए । साधुगण चातुर्मास के

धर्मोपदेश में प्रथमानुयोग के दृष्टांतों का उल्लेख कर धर्म की शुरुआत करते हुए करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग का उपयोग कर धर्मोपदेश दें, ऐसे प्रयास होने चाहिए। व्यर्थ का प्रदर्शन न हो इसका ध्यान रखा जाना चाहिए।

आज की स्थिति में देखें तो कई साधुओं की अगवानी में विशाल जुलूस निकालकर बाहरी संसाधनों के प्रदर्शन से उनके प्रभाव को प्रदर्शित किया जाता है। कई व्यक्ति ऐसे साधु चाहते हैं जिनसे दान के माध्यम से लाखों की आमदनी हो और मंदिरों और धर्मशालाओं का निर्माण हो। दूसरी तरफ यह स्थिति है कि अनेक साधु साध्वियों को चातुर्मास करने में भी दिक्कत आती है। कई साधु तेरा -बीस पंथ की भावना से ग्रसित होकर विवादास्पद क्रिया - कलापों को प्राथमिकता देते हैं। अतः इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किसी भी धर्मोपदेश से सामाजिक जीवन की एकता प्रभावित न हो तथा व्यक्ति जिन पूजा और दान के महत्व को समझकर कार्य करें, स्वाध्याय में रुचि बने, ऐसे प्रयास करना चाहिए। ताकि चातुर्मास व्यक्ति के आत्महित का साधन बने।

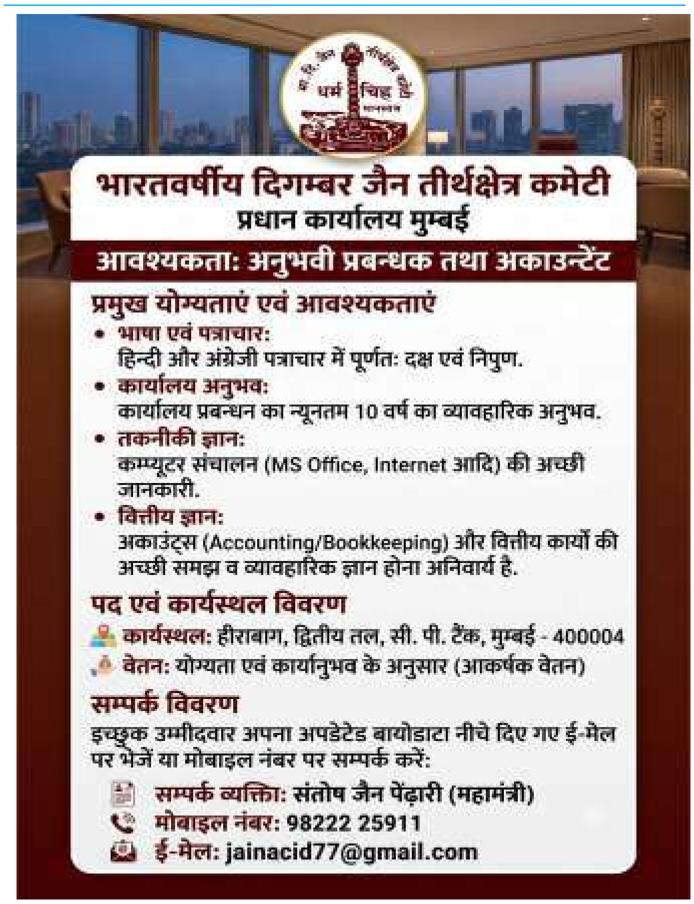

धर्म प्रवचन /शास्त्र स्वाध्याय /पाठशाला/ शिविर आदि का प्रचार क्यों जरूरी है ?

- प्रो अनेकांत कुमार जैन ,नई दिल्ली

अक्सर ऐसा देखा जाता है कि धर्म के क्षेत्र की अन्य क्रियाएं जैसे पंचकल्याणक,विधान,शोभा यात्रा,जयंती आदि अनेक गतिविधियों का प्रचार प्रसार बहुत जोर शोर से किया जाता है। उसमें भीड़ एकत्रित करने के लिए अन्यान्य स्थानों से नियमित बसें आदि भी चलवाई जाती हैं। टीवी चैनलों अखबारों पर उसके विज्ञापन प्रकाशित होते हैं। इन सबके लिए बहुत व्यय भी किया जाता है। तब जाकर ये कार्यक्रम सफल होते हैं। किंतु यदि कहीं नियमित शास्त्र स्वाध्याय और कक्षा प्रवचन,ज्ञान शिविर,पाठशाला आदि चल रहे हों तो उसका प्रचार प्रसार उसका विज्ञापन तो छोड़ो कभी कभी मंदिर जी के सूचना बोर्ड पर उसकी सूचना भी नहीं लिखी होती है। कभी कभी वहां माइक आदि की व्यवस्था तक भी नहीं बन पाती है।

विचार करें ! जब संसार के विषय भोग की सामग्री जैसे वस्त्र, भोजन, सोना, चांदी, सौन्दर्य प्रोडक्ट, मनोरंजन, कषाय वृद्धि के अन्य संसाधन, जिनके अनादि से गहन संस्कार हैं उनके लिए भी लाखों करोड़ों विज्ञापन में खर्च करो ,भोग के लिए उकसाओ ,तरह तरह के उपाय करो तब जाकर किसी तरह ये चीजें बिकती हैं , तब ऐसे समय में विषय भोग आदि से छुड़ाने वाले,वैराग्य वर्धक ,ज्ञान वर्धक , भव दुखों का एहसास कराने वाले , आत्म तत्व का अनुभव करवाने वाले प्रवचन स्वाध्याय कक्षा पाठशाला आदि में बिना प्रचार प्रसार के ,बिना अन्य प्रलोभन के ,बिना सूचना और बुलावे के लोग आ जाएं - ये कैसे संभव है ? लोगों की रुचि बदल दी गई है ,लोग मात्र क्रियाओं में धर्म मान रहे हैं,ज्ञान की महिमा ही नहीं है। एक कवि सम्मेलन करवाते हैं तो कवियों के चित्र पोस्टर गली गली में चिपकवा देते हैं ,लेकिन यदि एक विद्वान् वक्ता किसी जैन दर्शन विषय को समझने समझाने बुलाते हैं तो उसका नाम भी सूचना पट्ट तक पर नहीं लिखते। इस ग्लैमर वर्ड में भी हम चाहते हैं प्रवचन स्वाध्याय आदि यह सब बिना किसी पुरुषार्थ के चले तो चले - हमें कुछ नहीं करना पड़े।

इसीलिए नियमित शास्त्र स्वाध्याय,शिविर,पाठशाला में नए लोग आकर्षित नहीं होते हैं और पुराने लोगों की परंपरा समाप्त हो रही है। यह परंपरायदि कहीं किसी तरह चल भी रही है तो उसके हज़ार दुश्मन हैं। इसमें सच्ची बात सामने आती है ,लोगों को सच्चे धर्म का पता चलता है ,लोग असली नकली धर्मात्माओं का फर्क समझने लगते हैं। इसलिए नकली धर्मात्माओं को किसी न किसी बहाने यह बंद करवाने में ही अपनी सुरक्षा नज़र आती है।

जिन शासन यदि भविष्य में बचेगा तो शास्त्र सभाओं से बचेगा। नए लोग यदि जैन बनेंगे तो इन्हीं शास्त्र सभाओं, शिविरों, पाठशालाओं से बनेंगे। धर्म तीर्थ यदि अभी तक चला है तो इन्हीं प्रक्रियाओं से चला है। इसलिए जो लोग समझदार हैं, वास्तव में जिन शासन की स्थाई सुरक्षा चाहते हैं, तो शास्त्र स्वाध्याय, शास्त्र प्रकाशन और इसका जबरजस्त प्रचार प्रसार जितना हो सकें करें। इसके व्यय को व्यय न समझें, सच्चा इन्वेस्टमेंट मानें, यही भव से पार लगाएगा ,बाकी सब यहीं धरा रह जाएगा।

"रात्री भोजन त्याग" कारण,
अंध मां के लिये बना ऐतिहासिक राजाबाई टॉवर का जैन इतिहास

महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई में बना राजाबाई क्लॉक टॉवर, मुंबई के फोर्ट परिसर में मुंबई विश्वविद्यालय (University of Mumbai) के अंदर स्थित एक ऐतिहासिक 85 मीटर (280 फीट) ऊंचा घंटाघर है। सर जॉर्ज गिल्बर्ट स्कॉट द्वारा डिजाइन और 1878 में निर्मित यह टॉवर, विक्टोरियन गोथिक शैली का एक बेहतरीन उदाहरण है। यह 2018 में घोषित यूनेस्को विश्व धरोहर स्थलों (Victorian and Art Deco Ensemble of Mumbai) का हिस्सा है। यह टावर सिर्फ़ टाइमकीपर ही नहीं है, बल्कि शहर की सांस्कृतिक, एजुकेशनल और जैन परंपराओं से भी जुड़ा है।

इसका निर्माण 1 मार्च 1869 को शुरू होकर नवंबर 1878 में पूरा हुआ। जैन प्रेमचंद रॉयचंद ने अपनी नेत्रहीन मां 'राजाबाई' के लिए ₹5,50,000 की लागत से इसे बनवाया था, ताकि वह घंटी की आवाज से समय जान सकें।

जैन धर्म में सूरज डूबने के बाद खाना न खाने की परंपरा है। अपनी मां राजाबाई को 6 बजे का सही समय बता सकें, इसके लिए इस टावर में एक बड़ी घड़ी और घंटी लगाई गई थी। इसलिए, यह टावर न केवल आर्किटेक्चर से जुड़ा है, बल्कि जैन नैतिकता और मान्यताओं से भी जुड़ा है।

यह लंदन के 'बिग बेन' की तर्ज पर बनाया गया था। इसमें वेनेशियन और गोथिक शैली का मिश्रण है। टॉवर में चार तरफ 12 फीट व्यास के ओपल कांच के डायल लगे हैं, जिन्हें रात में रोशन किया जाता है।यह टॉवर वर्षों तक मुंबई की सबसे ऊंची इमारत रही है और अब इसे पूरी तरह से पुनर्स्थापित (restore) किया गया है। जय हो

आचार्यश्री सुनीलसागर जी महाराज के इंदौर चातुर्मास कलश स्थापना में पहुँचे राष्ट्रीय समन्वय समिति के पदाधिकारी

परम पूज्य चतुर्थ पट्टाधीश आचार्यश्री सुनीलसागर जी महामुनिराज ससंघ का भव्य वर्षायोग (चातुर्मास) मंगल कलश स्थापना समारोह अहिल्या नगरी इंदौर के नेमी नगर में अपार श्रद्धा एवं हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ।

इस पावन अवसर पर भारतवर्ष के सकल दिगंबर जैन समाज का प्रतिनिधित्व एवं नेतृत्व करने वाली पाँच प्रमुख राष्ट्रीय संस्थाओं (समन्वय समिति) के शीर्ष पदाधिकारियों ने इंदौर पहुँचकर पूज्य आचार्य भगवंत के दर्शन-वंदन किए और कलश स्थापना समारोह में सम्मिलित होकर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्य गुरुदेव के चरणों में श्रीफल समर्पित कर मंगल भावनाएँ व्यक्त करने वालों में समन्वयक श्री डी.ए. पाटिल, भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी (मुंबई) के महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी, राष्ट्रीय मंत्री श्री हँसमुख जैन गांधी, दिगम्बर जैन महासमिति के अध्यक्ष श्री अशोक जैन बडजात्या, तीर्थक्षेत्र कमेटी उत्तरप्रदेश-उत्तराखण्ड अंचल के अध्यक्ष एवं शतकोत्तर स्थापना महोत्सव के चेयरमेन श्री जवाहरलाल जैन, महासमिति के श्री सुरेन्द्र जैन बाकलीवाल, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद के अध्यक्ष श्री अनिल जैन, महामंत्री श्री सुनील जैन, मध्यांचल अध्यक्ष श्री डी.के. जैन, महामंत्री श्री राजकुमार घाटे, सर्वेक्षण समिति के चेयरमैंन श्री जैनेश झांझरी, श्री मनीष गोधा (सुमतिधाम) तथा इंदौर एवं देश से पधारे अनेक विशेष महानुभाव प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

समारोह में समन्वय समिति व विभिन्न संस्थाओं के इन शीर्ष प्रतिनिधियों ने आचार्यश्री के चरणों में नमन करते हुए कहा कि पूज्य गुरुदेव का यह ऐतिहासिक चातुर्मास संपूर्ण समाज में धार्मिक जागृति, वात्सल्य, एकता और धर्म प्रभावना का नया अध्याय लिखेगा। कलश स्थापना समारोह के दौरान देश भर के विभिन्न राज्यों से आए हज़ारों श्रद्धालुओं की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्यश्री सुनीलसागर जी महाराज ने सभी श्रावकों को चातुर्मास के दौरान संयम, स्वाध्याय, तप और तीर्थ रक्षा के संकल्प पर विशेष मार्गदर्शन प्रदान किया।

दिगंबर जैन समाज की 84 जातियों को एक मंच पर लाने की पहल:

'सर्वजातीय महासंघ' की बैठक संपन्नभारतवर्षीय दिगंबर जैन सर्वजातीय महासंघ, इंदौर की एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक बैठक श्री हसमुख जैन गांधी की अध्यक्षता में संपन्न हुई, जिसका सफल संचालन श्री बाहुबली जैन ने किया। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने बताया कि दिगंबर जैन समाज में कुल 84 जातियां शामिल हैं। इस विशेष बैठक का मुख्य उद्देश्य समाज की इन सभी विभिन्न जातियों के सदस्यों को एक साझा मंच प्रदान करना, आपसी परिचय बढ़ाना और सामाजिक व सामूहिक मुद्दों पर एकजुट होकर कार्य करना है। बैठक के दौरान मंच पर मुख्य रूप से शेखर छाबड़ा, निमिष जैन, डी. के. जैन, सुधीर सिंघई (लामेंचु समाज), विजय ओरा (नरसिंहपुरा समाज), सुधीर जैन (पद्मावती पोरवाल समाज), राजीव जैन (पल्लीवाल महासभा), डॉ. उदय जैन (तारण तरन समाज) और सुनील जैन (सेतवाल समाज) उपस्थित थे।समाज को एकजुट करने के इस राष्ट्रव्यापी अभियान के तहत पूर्व में सिद्धवरकूट में 45 जातियों का सफल सम्मेलन आयोजित किया जा चुका है, जबकि अयोध्या में हुए कार्यक्रम में 24 जातियों के अध्यक्षों ने सहभागिता की थी। इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए इंदौर की इस बैठक में 22 जातियों के प्रमुखों एवं प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक में सर्वसम्मति से यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया कि समाज की सभी जातियों को एकजुट करने के उद्देश्य से आगामी समय में राष्ट्रीय स्तर पर एक विशाल महासम्मेलन आयोजित किया जाएगा।

इंदौर में आयोजित हुई राष्ट्रीय समन्वय समितियों की महत्वपूर्ण बैठक प्रमुख विषयों पर हुआ मंथन

दिगंबर जैन समाज का राष्ट्रीय स्तर पर शीर्ष नेतृत्व करने वाली भारत की पाँच प्रमुख संस्था की एक विशेष एवं महत्वपूर्ण बैठक इंदौर में सफलतापूर्वक आयोजित की गई। इस उच्चस्तरीय बैठक में अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन सामाजिक संस्थाएं समन्वय समिति के समन्वयक श्री डी.ए. पाटिल, भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी (मुंबई) के महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी, उत्तरप्रदेश-उत्तराखण्ड अंचल के अध्यक्ष श्री जवाहरलाल जैन, दिगम्बर जैन महासमिति के अध्यक्ष श्री अशोक जैन बडजात्या, श्री सुरेन्द्र जैन बाकलीवाल, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद के अध्यक्ष श्री अनिल जैन, महामंत्री श्री सुनील जैन, तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल अध्यक्ष श्री डी.के. जैन, महामंत्री श्री राजकुमार घाटे, सर्वेक्षण समिति के चेयरमैन श्री जैनेश झांझरी उक्त प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक के दौरान तीर्थ संरक्षण, समाज में पारस्परिक समन्वय, धार्मिक परंपराओं की सुरक्षा तथा राष्ट्रीय स्तर पर समाज के सुदृढ़ीकरण से जुड़े अनेक प्रासंगिक विषयों पर गहन चिंतन-मनन एवं विस्तृत चर्चाएँ हुई। कार्यक्रम की संपूर्ण व्यवस्था एवं संचालन महासमिति के अध्यक्ष श्री अशोक जी जैन बड़जात्या ने अत्यंत कुशलतापूर्वक किया। बैठक के अंत में भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय महामंत्री श्री संतोष जैन पेंढारी ने सभी संस्थाओं के पधारे हुए राष्ट्रीय अध्यक्षों, पदाधिकारियों तथा अतिथियों का हृदय से आभार व्यक्त किया।

सिद्ध क्षेत्र गिरनार जी निर्वाण लाडू महोत्सव 2026

जय जिनेंद्र!भगवान नेमीनाथ की निर्वाण भूमि सिद्ध क्षेत्र गिरनार जी में इस वर्ष निर्वाण लाडू महोत्सव अत्यंत भव्यता एवं सुव्यवस्थित अनुशासन के साथ संपन्न हुआ।20 जुलाई को आयोजित इस महोत्सव में देशभर से लगभग 36,000 श्रावक-श्राविकाओं ने श्रद्धापूर्वक सहभागिता की और भगवान के चरणों में अपनी गहन श्रद्धा अर्पित की।यह संपूर्ण आयोजन शांतिपूर्ण एवं सुव्यवस्थित रहा, तथा श्रद्धालुओं ने भी की गई व्यवस्थाओं के प्रति संतोष व्यक्त किया।इस सफल आयोजन में अनेक सेवाभावी कार्यकर्ताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। विशेष रूप से भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी के *गुजरात अंचल के अध्यक्ष श्री पारस जी जैन बज के कुशल संयोजन एवं श्रीमान सोभाग मल जी कटारिया के नेतृत्व में यह आयोजन सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।हर साल की तरह निर्मल ध्यान केंद्र ट्रस्ट द्वारा श्रद्धालुओं के लिए की गई निःशुल्क आवास एवं भोजन की उत्कृष्ट व्यवस्था अत्यंत सराहनीय रही।महानुभावों गिरनार केवल एक पर्वत नहीं, बल्कि हमारी

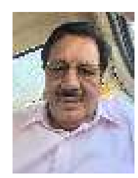

आस्था एवं आध्यात्मिक विरासत का पवित्र केंद्र है, जहाँ से अनंत सिद्धों ने मोक्ष प्राप्त किया है।मैं सभी जैन भाई-बहनों से विनम्र अपील करता हूँ कि गिरनार जी के प्रति अपनी श्रद्धा को और अधिक सुदृढ़ करें, अपने परिवार एवं बच्चों को इसकी महिमा से जोड़ें तथा अधिक से अधिक तीर्थयात्रा करें।इस अवसर पर करीब इस वर्ष 36,000 श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही , और हम आशा करते हैं कि आने वाले समय में यह संख्या और भी बढ़े—अतः हर परिवार का यह संकल्प हो कि जीवन में गिरनार जी की यात्रा अवश्य करें।हम सभी यह संकल्प लें कि हम गिरनार जी की महिमा को और अधिक विस्तार देंगे तथा इस पावन यात्रा को और भी भव्य बनाएंगे।बोलिए—सिद्ध क्षेत्र गिरनार जी की जय!भगवान नेमिनाथ स्वामी की जय!सभी सिद्ध परमात्माओं की जय!जय जिनेंद्र!जय नेमीनाथ पारस जैन बज अध्यक्ष तीर्थक्षेत्र कमेटी गुजरात

अति भव्य अगवानी में उमड़ पड़ा पूरा इन्दौर शहर; राष्ट्रसंत मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज का ससंघ हुआ नगर प्रवेश

राज्य सरकार द्वारा राजकीय अतिथि मुनि पुंगव १०८ श्री सुधासागर जी महाराज ससंघ १८ त्यागियों के साथ भव्य शोभायात्रा के रूप में इन्दौर में नगर प्रवेश हुआ। मुनिश्री की अगवानी में पूरा इन्दौर शहर उमड़ पड़ा। इस ऐतिहासिक अवसर पर मध्य प्रदेश सरकार के मंत्री श्री कैलाश विजयवर्गीय, श्री रमेश मेंदोला, श्री गोलू शुक्ला, श्री टीनू जैन, श्री गोपी कृष्ण नेमा, महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव, पूर्व विधायक श्री आकाश विजयवर्गीय एवं मध्य प्रदेश महासभा संयोजक श्री विजय धुर्रा सहित हजारों श्रद्धालुओं ने पूज्य संत की भावभीनी अगवानी की।

इस अवसर पर **भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी (मध्यांचल)** के अध्यक्ष श्री डी.के. जैन, श्री राजकुमार घाटे, श्री जैनेश झांझरी सहित संस्था के पदाधिकारियों एवं समाजशास्त्रियों ने राष्ट्रसंत के दर्शन-वंदन कर तीर्थ क्षेत्रों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु आशीर्वाद प्राप्त किया। शोभायात्रा इन्दौर के बड़े गणपति, क्लॉथ मार्केट, खजुरी बाजार, राजवाड़ा एवं जवाहर मार्ग से होती हुई दलाल बाग परिसर पहुँची, जहाँ यह धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। शोभायात्रा में आगे-आगे सफेद ध्वज, अखाड़े, तमिलनाडु से आया अश्वरथ समूह, उज्जैन का डमरू दल तथा विभिन्न सामाजिक व संगठनात्मक समूहों द्वारा भव्य स्वागत अभिनंदन किया गया।

दलाल बाग परिसर में धर्मसभा के प्रारंभ में आचार्यश्री के चित्र का अनावरण श्रीमती सुशीला अशोक पाटनी, श्री एस.के. जैन, श्री गुप्ता, श्रीमती शीला ढोढिया ने दीप प्रज्वलन कर किया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए राष्ट्रसंत मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज ने कहा कि "श्रमण संस्कृति लोगों के लिए मात्र संस्कृति ही नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की पद्धति है। यह मनुष्य को केवल श्रमण ही नहीं बनाती, अपितु उसमें श्रमणता के संस्कार भी भरती है।" उन्होंने इन्दौरवासियों को प्रेरणा देते हुए कहा कि "चातुर्मास के शगुन का लाभ पूरे इन्दौर को मिले, यह तो शगुन मात्र है; इसे अवसर के रूप में विकसित करें।"

इस अवसर पर आगामी २९ जुलाई को गुरु पूर्णिमा महोत्सव बड़े हर्षोल्लास व संगीत के साथ महापूजन के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया। इन्दौर नगर निगम एवं सकल जैन समाज की ओर से चातुर्मास का निवेदन करते हुए महापौर श्री पुष्यमित्र भार्गव ने इसे शहर का परम सौभाग्य बताया। कार्यक्रम के दौरान तीर्थक्षेत्र कमेटी (मध्यांचल) के अध्यक्ष श्री डी.के. जैन के साथ श्री नवीन गोधा, श्री मनीष गोधा, श्री अशोक दोशी, श्री आकाश जैन, श्री धर्मचंद जैन, श्री आनंद गोधा, श्री धर्मचंद जैन सिरोंज, श्री विनय बाकलीवाल, श्री कमल अग्रवाल, डॉ. अमित जी कासलीवाल, श्री आकाश कोयला, श्री हर्ष जैन, श्री प्रिंसपाल टोंग्या सहित लाखो श्रद्धालु उपस्थित रहे।

भारतवर्षीय तीर्थ क्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल की टीम ने किया कोटा क्षेत्र का दौरा मुनि श्री योग सागर जी एवं श्री आर्यिका स्वस्ति भूषण माताजी का लिया आशीर्वाद

भारतवर्षीय तीर्थ क्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल की टीम ने किया कोटा क्षेत्र का दौरा

मुनि श्री योग सागर जी एवं आर्यिका स्वस्ति भूषण माताजी का लिया आशीर्वाद

कमेटी के राजस्थान अंचल के कार्यकारी अध्यक्ष महेश काला ने बताया कि बैठक के पश्चात प्रतिनिधिमंडल ने कोटा में चातुर्मास कर रहे निर्यापक मुनि श्री 108 योग सागर जी महाराज के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल की टीम ने अंचल अध्यक्ष श्री राजकुमार कोठारी के नेतृत्व में कोटा क्षेत्र का दौरा कर स्थानीय पदाधिकारियों के साथ एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की।कमेटी के राजस्थान अंचल के कार्यकारी अध्यक्ष श्री महेश काला ने जानकारी देते हुए बताया कि बैठक के आयोजन के पश्चात प्रतिनिधिमंडल ने कोटा में चातुर्मास कर रहे निर्यापक मुनि श्री 108 योग सागर जी महाराज के दर्शन कर उनका पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर कोटा के पदाधिकारियों द्वारा तीर्थ क्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल के अध्यक्ष श्री राजकुमार कोठारी, कार्यकारी अध्यक्ष श्री महेश काला एवं अतिशय क्षेत्र बाड़ा पदमपुरा कमेटी के मंत्री श्री हेमंत सोगानी का माल्यार्पण कर भावभीना सम्मान किया गया।इसके उपरांत प्रतिनिधिमंडल ने केशोरायपाटन पहुँचकर श्री आर्यिका श्री 105 स्वस्ति भूषण माताजी के दर्शन कर आशीर्वाद प्राप्त किया।इस अवसर पर भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री राजकुमार कोठारी, कार्यकारी अध्यक्ष श्री महेश काला, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री संदीप जैन एडवोकेट, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री जे.के. जैन, मुख्य संरक्षक श्री हेमंत सोगानी एवं ज्योतिषाचार्य श्री विनोद जैन शास्त्री सहित अन्य गणमान्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

आचार्यश्री समयसागर जी महाराज ससंघ का भोपाल में हुआ ऐतिहासिक मंगल प्रवेश
विद्योदय तीर्थ में चातुर्मास कलश स्थापना संपन्न
मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव को मिला पाद-प्रक्षालन का सौभाग्य

परमपूज्य आचार्यश्री १०८ समयसागर जी महाराज ससंघ का मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में अपार श्रद्धा, भक्ति और अनुशासित जनसैलाब के बीच ऐतिहासिक मंगल प्रवेश संपन्न हुआ। २० मुनिराजों के साथ पदविहार करते हुए आचार्यश्री के नगर आगमन पर पूरा भोपाल शहर गुरुभक्ति के रंगों में सराबोर नजर आया। नारायण नगर एवं हबीबगंज मार्ग से निकली भव्य अगवानी शोभायात्रा में ढोल-नगाड़ों, जीवदया व हथकरघा संदेश की झांकियों तथा महिलाओं के मंगल कलशों के साथ हजारों श्रद्धालुओं ने "आचार्यश्री विद्यासागर महाराज की जय" और "आचार्यश्री समयसागर महाराज की जय" के गगनभेदी जयघोष किए। यात्रा मार्ग में नाके चौराहे पर मुनि श्री निर्णयसागर जी, उपाध्याय श्री विश्रुतसागर जी एवं निर्यापक मुनि श्री संभवसागर जी महाराज ससंघ ने आचार्यश्री की परिक्रमा कर चरण वंदना की, जिसे देखकर श्रद्धालु भाव-विभोर हो उठे। भोपाल सीमा स्थित ११ मील पर निर्मित विद्योदय तीर्थ परिसर में आचार्यश्री द्वारा नवीन जिनालय की आधारशिला रखी गई तथा समाज की ओर से चातुर्मास निष्ठा हेतु श्रीफल अर्पित किए गए। इसके पश्चात आयोजित भव्य समारोह में आचार्यश्री समयसागर जी महाराज के पावन सानिध्य में वर्षायोग चातुर्मास का मंगल कलश स्थापित किया गया। धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य भगवंत ने कहा कि "श्रमण संघ और यह विशाल वैभव पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री विद्यासागर जी महाराज के तप-पुरुषार्थ का ही फल है। संघ किसी एक व्यक्ति का नहीं होता, बल्कि हम संघ के होते हैं।" उन्होंने श्रद्धालुओं को पूज्य गुरुदेव द्वारा दिखाए गए आत्म-साधना, संयम और तीर्थ रक्षा के मार्ग पर निरंतर चलने की प्रेरणा दी।

इस ऐतिहासिक अवसर पर मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विद्योदय तीर्थ पहुँचकर पूज्य आचार्यश्री समयसागर जी महाराज के पाद प्रक्षालन किए तथा श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कई ऐतिहासिक घोषणाएँ करते हुए पूज्य आचार्यश्री को मध्य प्रदेश शासन का **राजकीय अतिथि** घोषित किया। इसके साथ ही उन्होंने घोषणा की कि मध्य प्रदेश विधानसभा का एक विशेष सत्र आयोजित कर आचार्यश्री को जनप्रतिनिधियों एवं अधिकारियों के मार्गदर्शन हेतु प्रवचन देने के लिए आमंत्रित किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने पूज्य गुरुदेव आचार्य विद्यासागर जी महाराज की पावन प्रेरणा का उल्लेख करते हुए प्रदेश भर में गौशालाओं के सुदृढ़ीकरण, गौ-संरक्षण और जीवदया के कार्यों को राज्य सरकार द्वारा निरंतर आगे बढ़ाने का संकल्प भी दोहराया। इस कलश स्थापना समारोह में मध्यप्रदेश, दिल्ली, महाराष्ट्र और राजस्थान सहित देशभर के कोने-कोने से आए हजारों श्रद्धालुओं एवं अनेक गणमान्य समाज सेवियों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

भुलेश्वर मुंबई में दिगम्बर-श्वेताम्बर साधु-संतों का ऐतिहासिक महामिलन; उपाध्याय श्री विरंजन सागर जी महाराज का चातुर्मास कलश स्थापित

श्री चन्द्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर, भुलेश्वर के तत्वावधान में परम पूज्य उपाध्याय श्री १०८ विरंजन सागर जी महाराज एवं मुनि श्री १०८ विसौम्य सागर जी महाराज ससंघ के पावन सान्निध्य में वर्षायोग चातुर्मास मंगल कलश स्थापना समारोह अपार श्रद्धा, भक्ति और उल्लास के साथ संपन्न हुआ। भव्य शोभायात्रा, ध्वजारोहण, दीप प्रज्ज्वलन तथा विधि-विधानपूर्वक मांगलिक क्रियाओं के साथ प्रारंभ हुए इस समारोह की सबसे ऐतिहासिक विशेषता दिगम्बर एवं श्वेताम्बर जैन परंपरा के साधु-संतों का अभूतपूर्व महामिलन रहा, जिसने सकल जैन समाज को एकता, समन्वय और धार्मिक सद्भाव का एक सशक्त संदेश दिया। समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में महाराष्ट्र विधानसभा अध्यक्ष श्री राहुल नार्वेकर उपस्थित रहे। इस अवसर पर भारत जैन महामंडल के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ख्यालीलाल तातेड एवं महामंत्री श्री बाबूलाल बाफना का बहुमान किया गया तथा पूज्य गुरुदेव को 'विश्व मैत्री दिवस' का निमंत्रण पत्र समर्पित किया गया।

धर्मसभा को संबोधित करते हुए अपने ओजस्वी मंगल प्रवचन में उपाध्याय श्री विरंजन सागर जी महाराज ने कहा कि "चातुर्मास केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि यह आत्मशुद्धि, संयम, तप, स्वाध्याय और संस्कारों को सींचने का महापर्व है।" उन्होंने श्रद्धालुओं से भगवान महावीर के अहिंसा, सत्य, क्षमा और अपरिग्रह के सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारने का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान पूज्य गुरुदेव के पाद प्रक्षालन, शास्त्र भेंट और संगीतमय महाआरती की मांगलिक क्रियाएँ संपन्न हुई। मंच का कुशल संचालन श्री संजय राजा जैन ने किया। आयोजन में चातुर्मास समिति के अध्यक्ष श्री सुरेश जैन (हिसावत), भुलेश्वर मंदिर के ट्रस्टी श्री दिनेश जी पांडे, श्री मनोज राममोहन जी जैन, डॉ. रमणीक बक्षी, श्री प्रशांत जैन (HDFC), श्री सौरभ पहाड़िया, श्री प्रवीण जैन, खंडेलवाल सभा के अध्यक्ष श्री के.सी. जैन, ग्लोबल महासभा के अध्यक्ष श्री जमनालाल हपावत, तीर्थक्षेत्र कमेटी के कोषाध्यक्ष एवं गुलालवाड़ी मंदिर के मैनेजिंग ट्रस्टी श्री अशोक दोशी, श्री रमेश जैन तथा समर्पित कार्यकर्ता श्री महावीर जैन, श्री मुकेश जैन हिसावत, श्री रोशन जैन, श्री प्रदीप भाई मेहता, श्री दीपक गांधी, श्री पारस जैन, श्री नीरज जैन एवं श्री अमन मोदी सहित मुंबई, मध्य प्रदेश, हरियाणा व दिल्ली से आए हज़ारों श्रद्धालुओं की गरिमामयी उपस्थिति रही।

भारत की राजधानी नई दिल्ली में पहली बार जैनविद्या अध्ययन में एम.ए. पाठ्यक्रम प्रारम्भ

भारतीय ज्ञान परम्परा के संरक्षण, संवर्धन और वैश्विक प्रसार की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल करते हुए श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली (केंद्रीय विश्वविद्यालय) के जैन दर्शन विभाग, दर्शनशास्त्रपीठ द्वारा राजधानी दिल्ली में पहली बार एम.ए. (जैनविद्या अध्ययन / M.A. in Jain Studies) का दो वर्षीय पूर्णकालिक नियमित स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। इस पाठ्यक्रम में प्रवेश प्रक्रिया 1 अगस्त 2026 से प्रारंभ हो गई है।

यह पाठ्यक्रम भारतीय ज्ञान परम्परा (Indian Knowledge System – IKS) के अंतर्गत प्रारम्भ किया गया है तथा इसका उद्देश्य जैन दर्शन, जैन साहित्य, भारतीय ज्ञान परम्परा तथा संस्कृत-प्राकृत में रचित मूल जैन आगम ग्रन्थों के गंभीर अध्ययन एवं अनुसंधान को नई दिशा प्रदान करना है। इस पाठ्यक्रम का माध्यम हिन्दी एवं अंग्रेज़ी दोनों होगा, जिससे किसी भी विषय से स्नातक विद्यार्थी बिना भाषा संबंधी कठिनाई के इस क्षेत्र में उच्च अध्ययन कर सकेंगे।

विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्रपीठ के डीन प्रो. अनेकान्त कुमार जैन ने बताया कि जैन केवल एक प्राचीन दर्शन ही नहीं, बल्कि भारत की अत्यंत प्राचीन धार्मिक एवं ज्ञान परम्परा का आधार भी है। जैन आचार्यों ने दर्शन, तर्कशास्त्र, गणित, व्याकरण, भाषाशास्त्र, साहित्य, इतिहास, चिकित्सा, पर्यावरण, नैतिकता तथा ज्ञान-विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में मौलिक और अप्रतिम योगदान दिया है। उन्होंने कहा कि भारत सरकार की महत्त्वपूर्ण भारतीय ज्ञान परम्परा (IKS) योजना के अंतर्गत जैन ज्ञान परम्परा को गहराई से समझना, संस्कृत एवं प्राकृत में रचित मूल जैन आगम ग्रन्थों का अध्ययन करना, उनमें निहित ज्ञान को सामने लाना तथा उस पर अंतरराष्ट्रीय स्तर के अनुसंधान को प्रोत्साहित करना समय की आवश्यकता है।

उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. मुरलीमनोहर पाठक जी तथा कुलसचिव प्रो. पवन कुमार शर्मा जी की विशेष प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से जैनदर्शन विभाग द्वारा राजधानी दिल्ली में पहली बार यह नवीन पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। उन्होंने कहा कि वर्तमान में भारत के अलावा विश्व के चालीस से अधिक देशों के विश्वविद्यालयों में जैन अध्ययन के केंद्र संचालित हो रहे हैं, जहाँ मूल ग्रन्थों के विद्वानों एवं शोधकर्ताओं की निरंतर आवश्यकता रहती है। ऐसे में यह पाठ्यक्रम उन विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा जो भारत तथा विदेशों में शोध, अध्यापन और जैन धर्म-दर्शन के विशेषज्ञ के रूप में अपना भविष्य बनाना चाहते हैं।

जैनदर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. वीरसागर जैन ने कहा कि यह पाठ्यक्रम अपने स्वरूप में अत्यंत अनूठा और उद्देश्यपूर्ण है। विश्वविद्यालय में संस्कृत माध्यम से मूल जैन शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन हेतु आचार्य (स्नातकोत्तर) पाठ्यक्रम लगभग चार दशकों से सफलतापूर्वक संचालित हो रहा है। अनुभव यह रहा कि संस्कृत एवं प्राकृत भाषा की अनिवार्यता के कारण आधुनिक शिक्षा पद्धति से स्नातक अनेक विद्यार्थी इच्छुक होने के बावजूद इस क्षेत्र में प्रवेश नहीं ले पाते थे। परिणामस्वरूप वे मूल जैन शास्त्रों के अध्ययन से वंचित रह जाते थे।

उन्होंने बताया कि अन्य विश्वविद्यालयों में संचालित अधिकांश एम.ए. पाठ्यक्रमों में मूल जैन ग्रन्थों का अध्ययन बहुत सीमित होता है तथा मुख्यतः विषयगत जानकारी ही दी जाती है। जबकि इस नवीन पाठ्यक्रम की विशेषता यह है कि विद्यार्थियों को आचार्य कक्षाओं के ही साथ आचार्य-प्रणीत मूल ग्रन्थों के माध्यम से विषय एवं भाषा—दोनों का व्यवस्थित अभ्यास कराया जाएगा, जिससे वे जैन संस्कृत प्राकृत साहित्य की मूल परम्परा से प्रत्यक्ष रूप से जुड़ सकेंगे।

विश्वविद्यालय के अनुसार यह पाठ्यक्रम यूजीसी-नेट, जेआरएफ, पीएच.डी., अध्यापन, शोध तथा अकादमिक क्षेत्र में भविष्य निर्माण के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा। साथ ही यह भारत एवं विदेश के विश्वविद्यालयों में उच्च अध्ययन, अंतरराष्ट्रीय शोध परियोजनाओं, शोधवृत्तियों तथा विश्वभर में संचालित जैन अध्ययन एवं इंडोलॉजी केंद्रों में अकादमिक अवसरों के नए द्वार भी खोलेगा।

प्रवेश के लिए किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय या संस्थान से किसी भी विषय में स्नातक होना आवश्यक है। पंजीकरण शुल्क ₹100 तथा वार्षिक शुल्क मात्र ₹3,450 निर्धारित किया गया है।

राष्ट्रसंत सारस्वताचार्य श्री देवनंदी जी महाराज का णमोकार तीर्थ पर 64 वाँ जन्म जयंती महामहोत्सव

- पवन घुवारा (भूमिपुत्र)

प्रज्ञाश्रमण सर्वोदयी राष्ट्रसंत सारस्वताचार्य पूज्यपाद वात्सल्य रत्नाकर, णमोकार तीर्थ प्रणेता पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री देवनंदी जी महाराज का जन्म 15 अगस्त 1963 को हुआ था। वर्ष 2026 में आयोजित होने वाला उनका 64वाँ जन्म जयंती महोत्सव एक अद्वितीय अवसर है, जहाँ भारत की आजादी के पर्व का जश्न भी एक साथ हर्षोल्लासपूर्वक मनाया जाएगा।

महातीर्थ णमोकार तीर्थ—जहाँ युगों की अखंड साधना, अनंत आस्था और संस्कारों का दिव्य संगम है। यह त्याग की वह पावन भूमि है, जहाँ प्रत्येक शिला जिनवाणी का संदेश देती है और हर दिशा में संतों के आशीर्वाद की सुगंध बिखरती है। यह णमोकार तीर्थ अतिशय युक्त स्थली भी है, जहाँ नाग-नागिन के युगल जोड़े ने ऋषि पंचमी जैसे पावन दिवस पर पूज्य गुरुदेव के समीप आकर लगभग 35 मिनट तक मांगलिक क्रीड़ा की और गुरुदेव से णमोकार महामंत्र सुनकर आशीर्वाद ग्रहण किया। इस अद्भुत दृश्य के दर्शन संघ में उपस्थित सैकड़ों लोगों ने प्रत्यक्ष रूप से किए।

ऐतिहासिक दो सिद्ध क्षेत्रों की पर्वतीय श्रृंखलाओं के मध्य स्थित इस पावन भूमि को पौराणिक मान्यता के अनुसार "रामटेकड़ी" भी कहा जाता है, जहाँ श्रीराम जी ने भी विचरण किया था। इस णमोकार भूमि को परमपूज्य गणाचार्य 108 श्री कुंथु सागर जी महाराज का विशेष आशीर्वाद प्राप्त है। उनके उत्तराधिकारी परम शिष्य सारस्वताचार्य 108 श्री देवनंदी जी महाराज की सामाजिक और धार्मिक उत्थान हेतु तीर्थ के विकास की परिकल्पना से यहाँ अद्भुत निर्माण कार्य हुए हैं—

* विश्व में एकमात्र 'बोलते हुए णमोकार मंत्र' पर आधारित समवशरण (5.5 एकड़ में फैला, 108 फीट ऊँचा)।

* सफेद संगमरमर से निर्मित 32 फीट ऊँची भगवान चंद्रप्रभु की प्रतिमा।

* त्रिकाल चौबीसी, 24 जिनालय, नवदेवता, नंदीश्वर द्वीप, पंचमेरु तथा 24 स्वरूपों वाली पद्मावती माता की प्रतिमाएँ।

* विश्व में प्रथम बार 51 फीट अरिहंत और 31 फीट की शेष पंचपरमेष्ठी प्रतिमाएँ।

* नौका विहार व मिनी ट्रेन से दर्शन की सुविधा।

* णमोकार आराधना केंद्र, डिजिटल प्रभावना केंद्र, गुरुमंदिर, प्राचीन तीर्थंकर प्रतिमाएँ, ग्रंथालय, संत भवन, धर्मशाला, मंगल कार्यालय व विभिन्न सामाजिक उपक्रम—जो अत्यंत अल्प समय में साकार हुए हैं।

"यस्य वाचि शांतिः, दृष्टि में करुणा, और चाल में मोक्षमार्ग हो—वे हैं आचार्य श्री देवनंदी जी महामुनिराज।"

ज्ञानं यः प्रकाशयति स एव गुरुः—जिन्होंने केवल उपदेश नहीं दिए, बल्कि जीवन जीने की सच्ची राह दिखाई।

णमोकार तीर्थ — जहाँ श्रद्धा साकार होती है

अनंत आस्था, अखंड साधना और संस्कारों का दिव्य संगम तथा त्याग की भूमि...

जहाँ प्रत्येक शिला जिनवाणी का संदेश देती है,

जहाँ हर दिशा में धर्म की सुगंध बिखरती है,

जहाँ हर मार्ग धर्म की ओर ले जाता है—युगों की साधना, संतों के आशीर्वाद और भक्तों के प्रत्येक क्षण जिनशासन के प्रति समर्पण से साकार हो रही यह दिव्य पावन धरा है।

कर्ता करे न कर सके, गुरु करे सो होय।
सात द्वीप नौ खंड में, गुरु से बड़ा न कोय।।
सात समुद्र की मसि करूँ, लेखनि सब बनराय।'
सब धरती कागद करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय।।

णमोकार तीर्थ महामहोत्सव केवल एक आयोजन नहीं था—वह अध्यात्म, अनुशासन और अतिशय का जीवंत चमत्कार था। जिस प्रकार पृथ्वी अपनी धुरी पर निरंतर, निर्विघ्न घूमती रहती है—ठीक उसी प्रकार यह विराट आयोजन भी सहज, स्वाभाविक और पूर्ण व्यवस्था

के साथ संपन्न हुआ।

पंचकल्याणक ने केवल प्रतिमा की प्राण-प्रतिष्ठा नहीं की; उसने स्मरण कराया कि हर आत्मा में परमात्मा बनने की संभावना है—गर्भ से संस्कार, जन्म से संभावना, तप से उत्कर्ष, ज्ञान से प्रकाश और मोक्ष से पूर्णता। णमोकार तीर्थ की उस पुण्यधरा पर मैंने भीड़ नहीं देखी; मैंने चेतना का महासागर देखा। मैंने केवल आयोजन नहीं देखा; मैंने गुरु की दृष्टि से सृष्टि को चलते देखा। मैंने केवल प्रतिमा नहीं देखी; मैंने अपने भीतर की जड़ता को पिघलते देखा।

एक स्वप्न का साकार होना...

डेढ़ दशक पहले की वह शाम याद है—टीनशेड के दालान में गुरुदेव तख्त पर बैठे थे। उन्होंने कहा था—"भैया, मैं इस तख्त पर विश्राम करता हूँ, आप नीचे चटाई बिछा लो।"

आज वही भूमि तीन सितारा सुविधाओं को मात देने वाली धर्मशालाओं से सुसज्जित है। लग्ज़री कॉटेज, विशाल मंडप, सुव्यवस्थित परिसर और बीहड़-सी प्रतीत होने वाली जमीन को जन्नत बना देना—यह केवल वास्तु-कौशल नहीं, यह गुरुदेव की दृष्टि, संकल्प और साधना का परिणाम है।

णमोकार तीर्थ केवल एक तीर्थ नहीं—यह कल्पना से परे अध्यात्म का साकार रूप है। यह प्रबंधन-कौशल की अद्वितीय मिसाल और गुरु-कृपा का जीवंत प्रमाण है। सच में—यह मात्र एक आयोजन नहीं, एक नवीन युग की स्थापना है, जिसका नाम है "णमोकार युग।"

इंजीनियर, आर्किटेक्ट और सिविल वर्क के जानकार दाँतों तले उँगली दबाते हुए पूछते—"यह कैसे संभव हुआ?"

उन्हें कौन समझाए कि यह केवल तकनीक नहीं... यह गुरु-दृष्टि, संकल्प और गुरु-कृपा है। णमोकार तीर्थ सीमेंट, रेत और पत्थरों का समूह नहीं—जीवंत चेतना का केंद्र है। यहाँ आकर समझ आता है कि जब गुरु की दृष्टि साथ हो, तो सृष्टि स्वयं सहयोगी बन जाती है।

जगतगुरु आचार्य श्री 108 कुंथुसागर जी महामुनिराज, तीर्थंकर भगवान का प्रतिरूप बनकर गणधर रूप में विराजमान हुए और उन्होंने सभी के प्रश्नों के सहज, शांत व दिव्य उत्तर दिए। ऐसा लग रहा था मानो कालखंड पीछे लौट गया हो और हम सचमुच तीर्थंकर भगवान के समवशरण में बैठे हों। चंचल चाँदनी श्वेत मेरु समान समवशरण पर पड़ रही थी। समवशरण के चारों ओर जलधारा प्रवाहित हो रही थी। उस जल में आकाश का प्रतिबिंब देखकर ऐसा लगा मानो आकाशगंगा स्वयं इस दिव्य स्थल की परिक्रमा करने उतर आई हो। 108 फीट ऊँचा समवशरण, पंचपरमेष्ठी की उत्तुंग प्रतिमाएँ और समवशरण के गर्भ में स्थित भगवान चंद्रप्रभु की मनोज्ञ प्रतिमा के दर्शन मात्र से चित्त प्रफुल्लित और आत्म-स्तंभित हो जाता है। यह परंपरा "जीवन और निर्वाण" के निरंतर प्रवाह का साक्षात् प्रमाण है।

30 से अधिक जैनाचार्यों का सानिध्य, 400 से अधिक साधु-साध्वियाँ और सैकड़ों तपस्वी पदविहार करते हुए क्षेत्र पर विराजमान हुए। चौका-व्यवस्था इतनी अनुशासित थी कि देवता भी विस्मित हो जाएँ। सच कहूँ—यहाँ की पावन मिट्टी, जहाँ अनेक साधु-परमेष्ठी मुनियों के चरण पड़े, उन्हीं चरणों के स्पर्श से यहाँ की धूल के कण-कण में प्राण जाग उठे। यहाँ बहती बयार साधुओं की आभा के संपर्क में आने से प्राणवायु-सी सुशोभित हो गई।

चारों दिशाओं में आचार्य परमेष्ठी महाश्रमण जनों का सानिध्य रहा। बाल ब्रह्मचारिणी वैशाली दीदी द्वारा प्रस्तावना के साथ, ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नीलम जी (अजमेर) व श्री संतोष पैंढारी (नागपुर) की अध्यक्षता में अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा पंचकल्याणक महामहोत्सव 6 फरवरी से 13 फरवरी 2026 तक एवं महामस्तकाभिषेक 25 फरवरी 2026 तक संपन्न हुआ।

णमोकार तीर्थ, मुंबई-आगरा हाईवे नंबर 3, मोहाड़ी (मांसले), तालुका/तहसील चांदवड़, जिला नाशिक (महाराष्ट्र) में स्थित है।

* रेल मार्ग: नासिक रोड स्टेशन (45 किमी), मनमाड (35 किमी)

* वायु मार्ग: ओझर एयरपोर्ट (60 किमी)

सिद्ध क्षेत्र गजपंथा और सिद्ध क्षेत्र मांगीतुंगी के मध्य स्थित श्री णमोकार तीर्थ अपने भौगोलिक सौंदर्य के साथ-साथ अपनी आध्यात्मिक गरिमा के लिए भी जाना जाता है। मनमाड़, नासिक, शिरडी और त्र्यंबकेश्वर जैसे प्रमुख धार्मिक स्थलों के समीप स्थित यह तीर्थ आत्मशुद्धि और अंतर्मुखी साधना का एक प्रभावशाली केंद्र बन चुका है।

बुंदेलखंड वसुंधरा की शाहगढ़ नगरी में जन्मे सारस्वताचार्य श्री देवनंदी जी महाराज के 64 वें जन्म जयंती महामहोत्सव के इस अद्वितीय आध्यात्मिक अवसर पर आइए—

"जिंदगी सँवारने को तो जिंदगी पड़ी है,
चलो वो लम्हा सँवार लेते हैं, जहाँ जिंदगी खड़ी है।"
जुड़ना बड़ी बात नहीं, जुड़े रहना बड़ी बात है।
"गुरु पद पंकज रज सिर धारे, मिटे सकल संताप हमारे।"

22 अक्टूबर "तीर्थ सुरक्षा दिवस" - श्री सुरत्न सागराचार्य
संतों के चातुर्मास तीर्थों पर होंगे तभी तीर्थ सुरक्षित रहेंगे
शिखरजी के लिए दान, तीर्थक्षेत्र कमेटी को ही देना चाहिए

तीर्थ सुरक्षित होंगे तभी हमारी संस्कृति सुरक्षित होगी'दिल्ली प्रवास के समय चल रहे विधान में जब तीर्थक्षेत्र कमेटी आई और चैनल महालक्ष्मी ने मंच से सवाल पूछा कि तीर्थों की रक्षा कैसे हो सकती है, तब इस सवाल पर सहज ही मुख से निकल गया कि जब-जब संतों के चातुर्मास तीर्थों पर होते रहेंगे, तीर्थ सुरक्षित रहेंगे। फिर शुरूआत आपसे ही? इस प्रश्न पर हम अपने को रोक नहीं सके और मन ही मन ठान लिया कि इस बार चौमासा किसी तीर्थ पर ही होगा। सोने पर सुहागा तब हुआ, जब मालूम चला कि इस चौरासी मथुरा में ही 22 अक्टूबर 1902 को भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की स्थापना हुई थी और इस वर्ष उसी तारीख को अपने 125वें वर्ष में प्रवेश करते हुए शतकोत्तर रजत महोत्सव का शंखनाद यहीं से करेगी, तब यह निर्णय कर लिया कि इस वर्ष का चातुर्मास अंतिम अनुबद्ध केवली श्री जम्बू स्वामी जी की निर्वाण भूमि पर ही होगा,' यह कहते हुए स्थविर संत श्री सुरत्न सागराचार्य ने कलश स्थापना की मंगलमय शुरूआत की।84 वन से जानी जाने वाली तीर्थनगरी मथुरा चौरासी के प्राचीन इतिहास बताते हुए आचार्य श्री ने कहा कि 1972 में आचार्य महावीर कीर्ति जी ने यहीं वर्षायोग किया था। तपस्वी सम्राट ने यहां दीक्षायें भी दी थीं और चतुर्मास के एक माह मात्र मूंगफली का आहार लिया था। अब इतने वर्षों पश्चात यहां वर्षायोग में तीर्थरक्षा का निमित्त बना। • आचार्य सुनील सागरजी ने भी कुछ वर्ष पूर्व कंकाली टीला, जैन म्यूजियम जाकर जैन संस्कृति को नजदीक से देखा था।* अब हमारी साधना का एक और लक्ष्य है 22 अक्टूबर, जिसे हम सब मिलकर तीर्थ रक्षा दिवस के रूप में मनायेंगे, यह सुअवसर तीर्थक्षेत्र कमेटी के 125वें वर्ष में प्रवेश का दिन होगा।उन्होंने बताया कि तीर्थक्षेत्र कमेटी करती क्या है - आज हमारे तीर्थ सुरक्षित हैं तो तीर्थक्षेत्र कमेटी के कारण, इसी कारण आप तीर्थों की सुलभता से वंदना कर पा रहे हो, कभी टोंकों पर बिजली गिरे, सीढ़ियां सुविधाजनक बनानी हो, वंदना पथ की मरम्मत हो, विवादों को सुलझाने की बात हो, तो वह केवल तीर्थक्षेत्र कमेटी ही करती है।उन्होंने अपील की कि जहां भी संतों के चातुर्मास हो रहे हैं, वहां-वहां तीर्थ सुरक्षा के प्रति जागरूकता के कार्य करें, जागरूककरें।इस अवसर पर तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन ने कहा कि भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी का केवल मात्र एक ही उद्देश्य अपने प्राचीन तीर्थों की सुरक्षा, संरक्षण, संवर्धन, विवादों का निवारण है। हमारा श्वेतांबर बंधुओं से समन्वय का भी प्रयास चल रहा है। 22 अक्टूबर को सिद्ध क्षेत्र मथुरा से शतकोत्तर रजत वर्ष की शुरूआत करेंगे, जिसका उद्देश्य जन-जन में अपने तीर्थों की सुरक्षा के लिये जागरूकता फैलना होगा।तीर्थ सुरक्षा से ही हमारी संस्कृति बचेगी, धर्म बचेगा, वर्ना 6-7 दशकों बाद जैन ही नहीं बचेंगे। आज जैसा माहौल चल रहा है, ऐसे में अपने मन्दिरों की बाउण्ड्रीवाल जरूर बनाकर रखें तथा आपके कागजात अपडेट हों, मंदिर के चल-अचल सामानों का पूरा रिकार्ड हो।चैनल महालक्ष्मी ने इस अवसर पर धर्मसभा को सम्मेद शिखरजी के प्रति उनसे जागरूक करने के लिए प्रश्न किया कि शिखरजी की यात्रा किस किस ने की है, तो लगभग सभी के हाथ उठ गये, फिर दोबारा पूछा, उस पवित्र पावन शिखरजी पर्वत के लिये दान किस-किस ने किया है, तो

भी 90 फीसदी हाथ उठ गये। अब कहा कि आपमें से 95 फीसदी गलत कह रहे हैं। चौंक गये सब। हां, सच तो यह है कि आप लोगों ने उस पवित्र शिखरजी पर्वत के लिये तो दान दिया ही नहीं। आप जिस कोठी, धर्मशाला में ठहरते हो, बस वहीं उसकी सुविधाओं की राशि के साथ अपने दान की राशि भी दे देते हैं, हां आपने 10-20 हजार जरूर दिये होंगे, पर यह राशि उस चारदीवारी में ही रह जाती है। अगर आपका मन उस बड़े सिद्धक्षेत्र की सुरक्षा, संवर्धन, संरक्षण के लिये देने मन हो तो वह तीर्थक्षेत्र कमेटी को ही देना होगा, जिसका कार्यालय शिखरजी में विमल समाधि के साथ है, ऊपर पारस टोंक की सीढ़ियों के नीचे भी है। (लगा यह जानकारी अधिकांश लोगों को नहीं है, आप सब भी जन-जन तक यह बात पुहंचायें)।चातुर्मास कलश स्थापना के अवसर पर तीर्थ सुरक्षा कलश प्राप्त करने का सौभाग्य श्री महामृत्युंजय महामण्डल परिवार, दिल्ली को मिला। इस अवसर पर तीर्थक्षेत्र कमेटी से मीनू जैन भी उपस्थित थीं। मथुरा कमेटी ने देशभर से आये श्रद्धालुओं का स्वागत सम्मान किया।मंच संचालन पंडित सतीश जैन शास्त्री 'सरल' दिल्ली ने किया।

आगरा में तीर्थ सुरक्षा संकल्प दिवस

2030 तक संतों की उपस्थिति में चढ़ेगा 5वीं टोंक पर निर्वाण लाडू - आचार्य श्री सौभाग्य सागर जी

संतों के सहयोग से तीर्थों की सुरक्षा का होगा जन-जागरण -सुरत्न सागराचार्य

अपने तीर्थों की सुरक्षा के लिये अब हल्ला बोलने का वक्त- मुनि श्री समत्व सागर जी

० संगठन को मजबूत करने की जरूरत- जम्बू प्रसाद जैन

० शिखरजी में दान अनादिनिधन तीर्थ के लिये भी कीजिए

मरसलगंज गौरव परम्पराचार्य श्री सौभाग्य सागर जी, स्थविर संत सुरत्न सागराचार्य और मुनि श्री समत्व सागर जी के परम सान्ध्यि में रखें, तीर्थकर श्री नेमिनाथ जी के 86724वें मोक्ष कल्याणक दिवस पर आगरा के रामबाग, टोंक रोड स्थित नसियां जी में क्षेत्र की सबसे प्राचीन श्री नेमिनाथ जी की प्रतिमा पर निर्वाण लाडू कार्यक्रम में भारतवर्षीय दिगबंर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की उपस्थिति में, यह दिन तीर्थ संकल्प दिवस के रूप में मनाया गया।

इस अवसर पर परम्पराचार्य श्री सौभाग्य सागर जी ने कहा कि अगर तीर्थक्षेत्रों को सुरक्षित रखना है तो जितने भी दिगंबर संत है, उनको 8 माह गांव-गांव, शहर-शहर भ्रमण कराओ और फिर 4 महीने जहां आवश्यकता है, उन तीर्थों पर संतों का चातुर्मास तीर्थक्षेत्र कमेटी करायें। अगर उन तीर्थों पर आवश्यक व्यवस्था नहीं है, तो उसके निकट सिटी में करायें, पर इससे क्षेत्र के नाम पर चातुर्मासों में धन का सदुपयोग करें। आज प्रदर्शन नहीं, समर्पण होना चाहिए। आज इस प्रदर्शन के कारण ही तीर्थों से दूर हो रहे हैं।

उन्होंने एक बड़ी बात कहकर पूरे जैन समाज में खुशी की लहर दौड़ा दी, जब गिरनार पर 5 वीं टोंक पर न लाडू चढ़ रहा था, न अर्घ, न जयकारा, तब उन्होंने याद दिलाया मेरु भूषण महाराज के 20 दिन के

आमरण अनशन का इधर उनकी समाधि हो गई, उधर सरकार के वायदे की भी। अब साधु संतों का आगे आना होगा, और मैं विश्वास दिलाता हूं कि हम भी गिरनार की यात्रा को जायेंगे, अनेक संत जायेंगे और सब मिलकर 2030 तक वही 5वीं टोंक पर निर्वाण लाडू चढ़ायेंगे, जैसे 2015 तक होता था।

इस तीर्थ सुरक्षा संकल्प दिवस पर स्थविर संत सुरत्ना सागराचार्य जी ने कहा कि आज 5 वीं टोंक पर न लाडू चढ़ा, न जयकारा ऐसी स्थिति क्यों? आज तीर्थ सुरक्षित करना है तो पूरे समाज को एक होकर जागृत होना होगा। आज अफसोस है कि जब तीर्थ सुरक्षित होता है, तो आपके पास समय नही होता, और जब वह निकल जाता है तो आपको समय मिल जाता है।

उन्होंने कहा अभी चैनल महालक्ष्मी के शरद जैन जी से चर्चा हो रही थी सांध्य महालक्ष्मी देखकर कि अब जब आधार कार्ड के साथ गिरनार वंदना के लिये पंजीकरण करना जरूरी हो गया है तो दिगंबर संत कैसे करेंगे वंदना? आज हमारी सोच तो ऐसी हो गई है कि अपने तीर्थों को ही पर्यटन बनाने में लगे हैं और सरकार तो पहले ही इस कोशिश में है।

उन्होंने कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी ने संकल्प लिया है कि अब संतों के साथ मिलकर जागरण करेंगें। जैसी शरद जी ने जानकारी दी कि तीर्थक्षेत्र कमेटी हर साधु के पास जाकर अनुरोध कर रही है कि जहां भी वर्षायोग हो, वहां तीर्थों के प्रति जागरूकता के लिये आहवान करें। कहते हैं तीर्थक्षेत्र कमेटी ने क्या किया, तो समझ ले आज शिखरजी , गिरनार जी, केसरिया जी, शिरपुर जी आदि के दर्शन कर पा रहे हैं वो इसी की देन है। एक पत्थर शिखर में लगता है वो सबको दिखता है और एक नींव में, जो दिखता नहीं पर पूरा जिनालय उसी पर खड़ा होता है, तीर्थक्षेत्र कमेटी वहीं नींव का पत्थर है।

मुनि श्री समत्व सागरजी ने कहा कि एक वह युग था जब श्रीकृष्ण जी ने सत्य के साथ खड़े होने के लिये कम संख्याबल वाले पाण्डवों का साथ दिया और आज उन्हीं के अनुयायी सत्य की बजाय बहुसंख्य बल के साथ खड़े हो रहे हैं। आज हमारे देश की सरकार जैन ग्रंथों को नहीं स्वीकारती, तो विदेशी मंच पर जायें, वो आज भी निरपेक्ष रूप से स्वीकार करेंगें। भारत का इजिहास प्रमाण है कि जैनों ने किसी के धार्मिक प्रतिष्ठानों पर कभी कब्जा नहीं किया।

उन्होंने कहा कि अब हल्ला बोलना पड़ेगा, आवाज उठानी होगी। मैंने 2016 में आर टी आई से जैन जिनालयों की जानकारी चाही तो जवाब मिला केवल चार जिनालय। आज 'आरा' के सभी 50 के लगभग जिनालयों का बिहार संस्कृति पर्यटन विभाग के पास पंजीकृत है, पर ऐसी स्थिति और कहां-कहां है, शायद कहीं नहीं। सरकार के यहां पंजीकरण कराये, कहीं किसी और जिनालय की गिरनार जैसी स्थिति न हो। ध्यान रखना होगा जिनालयों के नव निर्माण में फूल पत्ती न बनवायें, उनकी जगह पिच्छी कमण्डलु बनवायें, दिवारों, शिखरों पर तीर्थंकरों की खड्गासन प्रतिमायें उकेरें। बाडंड्री में 'यह दिगंबर जिनालय है' ऐसी प्लेटें डालें, जिनका कुछ हिस्सा बाहर दिखे। वेदी पर अष्ट मंगल, तीर्थंकर के 16 स्वप्न दिगम्बर आमनाओं के अनुरूप में ही बनवायें। 2021 में मैने इसी सुरक्षा के लिये कम्प्यूटर द्वारा ताड़ पत्रों पर लेखन शुरू कराया, जिसकी आयु 2000 वर्ष से ऊपर होती है। रिकार्डों का डिजलिटाइज करें। इसके लिये जागरूकता के लिये उन्होंने चैनल महालक्ष्मी को जिम्मेदारी उठाने के लिये कहा।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जम्बू प्रसाद जैन जी ने कहा कि हम जैन आपस में लड़ रहें हैं, संगठन कमजोर हो गया है। ऐसे ही चला तो 60-70 साल बाद जैनों का नाम लेने वाला कोई नहीं बचेगा। आपसी झगड़े मिटाकर समन्वय की ओर बढ़े। जातियों में नहीं बांटे, जैन रहिये और अपने नाम के पीछे जैन जरूर लिखिये। पंथवाद-संतवाद पर अब विराम लगाने की आवश्यकता है।

शिखर जी तीर्थ के लिये क्या दान दिया?

इस खचाखच भरी धर्म सभा में एक सवाल ने सभी उठे हाथों को नीचे करने को मानो मजबूर कर दिया। कौन-कौन शिखर जी वंदना करने जाते हैं और दान कहां देकर आते हैं, 90 फीसदी के हाथ खडे हो गये। 10-20 हजार रुपये शिखरजी में जाने, ठहरने, खान-पीने की सुविधायें और दान देने में खर्च करने वालों से अगला सवाल था कि शिखरजी तीर्थ यानि पर्वत के लिये आपने क्या दान उसका संवर्धन, संरक्षण करने के लिये जिम्मेदार, तीर्थक्षेत्र कमेटी को दिया? उठने वाले हजार से ज्यादा हाथो में से चार पांच ही रह गये, बाकी सब नीचे। सभा के संयोजक मनोज बाकलीवाल ने स्पष्ट किया कि आप जहां ठहरते है वहीं दान देते हैं और समझते हैं कि आपने सम्मेद शिखरजी पर्वत के लिये दान दिया। आपने दान दिया अच्छी बात है, पर वो उस कोठी, धर्मशाला की दीवारों से बाहर नहीं जाता। दान आपको शिखरजी तीर्थक्षेत्र कमेटी के कार्यालय में जमा कराना चाहिये, जिसका आफिस विमल सागर समाधि के साथ और बीसपंथी कोठी के सामने है। उस कार्यालय में जमा करायें, दान राशि तो क्यू आर कोड स्केन करके, सीधे तीर्थक्षेत्र कमेटी के बैंक खाते में सीधे जमा करा सकते हैं। इसका सदुपयोग तीर्थो की सुरक्षा संवर्धन में होता है।

इसी तरह गौतम गणधर स्वामी व पारस टोंक पर रखी दिगम्बर भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की गुल्लक में भी दान राशि डाली जा सकती है। पारस टोंक के नीचे तीर्थक्षेत्र कमेटी के कार्यालय में भी जमा करा सकते हैं।

इस अवसर पर आज जैन परिषद के अध्यक्ष श्री जगदीश प्रसाद जैन के साथ पूरी कमेटी, तीर्थक्षेत्र कमेटी के शतकोत्तर रजत वर्ष कमेटी के चेयरमैन जवाहरलाल जैन, चैनल महालक्ष्मी आदि भी उपस्थित थे। मंच संचालन मनोज बाकलीवाल जी ने बखूबी किया।

स्वच्छ तीर्थ–पवित्र तीर्थ: शाश्वत सिद्धक्षेत्र सम्मेदशिखरजी पर्वतराज पर तीर्थक्षेत्र कमेटी का वृहद स्वच्छता अभियान

शाश्वत सिद्धक्षेत्र श्री सम्मेदशिखरजी पर्वतराज की पवित्रता, निर्मलता और गरिमा को अक्षुण्ण बनाए रखने के उद्देश्य से **भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी** द्वारा पर्वतराज पर विशेष एवं निरंतर साफ-सफाई अभियान चलाया जा रहा है। तीर्थ की स्वच्छता और सुंदरता को संवर्धित करना हम सभी जैन धर्मावलंबियों की साझी एवं नैतिक जिम्मेदारी है। इसी संकल्प के साथ कमेटी के समर्पित कार्यकर्ताओं, सेवाभावी दल तथा स्थानीय कर्मचारियों द्वारा वंदना मार्ग, विश्राम स्थलों और प्रमुख टोंकों के आसपास नियमित रूप से वृहद स्वच्छता कार्य किया जा रहा है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी ने देश-विदेश से पधारने वाले सभी दर्शनार्थियों, यात्रियों एवं वंदना करने वाले धर्मप्रेमी बंधुओं से भावभीनी अपील की है कि वे पर्वतराज की पवित्रता बनाए रखने में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें। वंदना के दौरान प्लास्टिक कचरा, खाली बोतलें, पॉलीथिन व थर्माकोल के रैपर मार्ग या टोंकों के आसपास न फेंकें तथा सभी प्रकार का अपशिष्ट केवल निर्धारित कचरे के डिब्बों (Dustbins) में ही डालें। तीर्थक्षेत्र कमेटी का मानना है कि पवित्र शिखरजी की स्वच्छता और शुद्धता बनाए रखना भी धर्म प्रभावना का एक मुख्य अंग है। सभी भव्यजीव वंदना के साथ-साथ स्वच्छता के इस पावन संकल्प को अपनाकर पुण्य लाभ अर्जित करें।

पुणे में आचार्य श्री प्रणामसागरजी महाराज के पावन सानिध्य में 'तीर्थ सुरक्षा कलश' विधिवत स्थापित

गंजपेठ स्थित श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर में "अभिनव मानतुंग" भक्तामर वाले बाबा, परम पूज्य डॉ. आचार्य श्री प्रणामसागरजी महाराज के पावन सानिध्य में मंगल चातुर्मास महोत्सव अत्यंत भक्तिभाव और उल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस पावन अवसर पर श्रद्धालुओं को पूज्य गुरुदेव के दर्शन, आशीर्वाद एवं धर्मोपदेश का परम सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।चातुर्मास महोत्सव के इस पावन अवसर पर भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के महाराष्ट्र अंचल अध्यक्ष श्री मिहिर गांधी एवं कमेटी के अन्य प्रतिनिधियों की विशेष उपस्थिति में "तीर्थ सुरक्षा कलश" श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर, गंजपेठ में विधिवत स्थापित किया गया। इस दौरान श्री मिहिर गांधी तथा गंजपेठ जैन समाज के गणमान्य श्रद्धालुओं ने आचार्य श्री के दर्शन कर आशीर्वाद ग्रहण किया एवं तीर्थों की सुरक्षा व संरक्षण का संकल्प दोहराया।

बैरनपल्ली, तेलंगाना का प्राचीन जिनालय एवं १० वीं सदी की जैन धरोहर

डॉ. मनीष जैन 'मलयकेतु'

दक्षिण भारत का तेलंगाना प्रान्त भी जैन धर्म से सम्बंधित पुरासम्पदा से परिपूर्ण है एवं कई ऐतिहासिक मंदिरों की उपस्थिति रखता है। तेलंगाना राज्य पूर्व में आंध्र प्रदेश का ही भाग था। जैन संस्कृति और धर्म का प्रभाव अन्य क्षेत्रों की तरह इस क्षेत्र में भी गहराई तक था। यदि हम इतिहास पर दृष्टिपात करे तो हम पाते है कि जैन धर्म आंध्र–तेलंगाना क्षेत्र में ईसा की पूर्व शताब्दियों से विद्यमान था, क्योंकि जैन साधुओं के निवास की प्राकृतिक गुफाएं जिनमे शैल शैयाएँ, और शिलालेख पाए गए है, वो यहाँ पर्याप्त मात्रा में पाई गई है। जैन धर्म से सम्बंधित स्मारक, प्रतिमाएं, मंदिर आदि भी प्रचुर मात्रा में पाए गए है। आंध्र तेलंगाना प्रदेश के प्रमुख जैन मंदिरों का निर्माण ठी शताब्दी से घ वी शताब्दी के मध्य में हुआ है। इस समय में विभिन्न राजवंशों ने इस प्रदेश पर शासन किया। जैन धर्म की प्रगति में इन राजवंशो के शासकों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आंध्र/तेलंगाना क्षेत्र में बड़ी संख्या में प्राचीन जैन विरासत और मंदिर खो चुके है, समय द्वारा नष्ट हो चुके है या परिवर्तित हो चुके है। कुछ मंदिर अब भी उपस्थित है, किन्तु, उनमें से अधिकांश जीर्ण शीर्ण अवस्था में है अथवा जैनों की नगण्य संख्या होने से एवं जागरूकता की कमी से उनकी देखभाल नहीं की जा रही। हालाँकि, कुछ प्राचीन जैन मंदिर तेलंगाना सरकार के/पुरातत्व विभाग के अधीन हैं। ऐसा ही एक प्राचीन जैन स्थल है – बैरनपल्ली, जहाँ आज भी प्राचीन जिनालय उपस्थित है एवं जो सरकार/पुरातत्व विभाग के अधीन आता है। ये स्थल न केवल जैन धर्म की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि, पुरासम्पदा और जैन इतिहास से परिपूर्ण है। यह इस धारणा को भी तोड़ता है कि जैन धर्म का फैलाव तेलंगाना या आंध्र प्रदेश में उस रूप में नहीं था, साथ ही इस स्थल को कल्याणी के चालुक्यों के साथ साथ राष्ट्रकूटों से भी जोड़ता है।

बैरनपल्ली ग्राम तेलंगाना प्रान्त के सिद्धिपेट जिले के मड्डूर तालुका में जिला मुख्यालय से दक्षिण पूर्व दिशा में ४३ किमी तथा वारंगल के पश्चिम दिशा में ७० किमी की दूरी पर स्थित है। बैरनपल्ली ग्राम वस्तुत: अपने प्राचीन जिनालय के लिए ही विख्यात है, जिसे स्थानीय लोग "अंगदी वीरन्ना गुड़ी" के नाम से जानते है। यह प्राचीन मंदिर जो कि ११०८ ईस्वी वर्ष में निर्मित है, इतिहास और वास्तुकला का खजाना है। बैरनपल्ली और इसका समीप नगर बेक्कल कभी व्यापार और वाणिज्य का एक संपन्न केंद्र था। मंदिर से

प्राप्त शिलालेख, चालुक्य वंश के शासनकाल और उस समय के एक प्रमुख बाजार केंद्र के रूप में इस स्थल का एवं इस जिनालय का महत्त्व प्रकट करते है। मंदिर की अनूठी वास्तुकला चालुक्य शैलियों का मिश्रण है, जो इसे अभियांत्रिकी का एक सच्चा चमत्कार बनाती है। कुल मिलाकर इस जैन मंदिर को इसकी विशेषताओं के कारण एक छिपा हुआ रत्न भी कह सकते है।

बैरनपल्ली का प्रसिद्ध प्राचीन जैन बसदि : अंगदी वीरन्ना गुड़ी जैन मंदिर –

११०८ ईस्वी वर्ष में निर्मित यह जिनालय पूर्वाभिमुख है। इस मंदिर में गर्भगृह, अंतराल, मुखमंडप और अर्ध–मंडप सम्मिलित हैं। मंदिर के पाद–खंड, दीवारें एवं छत इत्यादि पुरातन युग के पत्थर के स्तंभों के सहारे टिकी हुई हैं। मुखमंडप के चौखटों पर आधार पर दोनों ओर पूर्णघट की नक्काशी की गई है, जो उस समय की स्थापत्य शैली को दर्शाती है। मंदिर के प्रवेश द्वार के उत्तर की ओर द्वार के चौखट पर गजलक्ष्मी की छवि उकेरी गई है, और उसके नीचे जैन तीर्थंकर की एक प्रतिमा सरदल पर उत्कीर्ण है जो कि दोनों ओर दो अप्सराओं से घिरी है। यह इस तरह की एकमात्र जैन बसदि है, जहां सरदल पर गजलक्ष्मी की नक्काशी के नीचे तीर्थंकर की प्रतिमा उपलब्ध है एवं जिसे दो चंवरधारियों के साथ ही सरदल पर उत्कीर्ण किया गया। संभवत: जैन तीर्थंकर महावीर स्वामी की प्रतिमा यहाँ मूलनायक रही होगी, क्योंकि गर्भगृह की मूल पादपीठ पर तीन वृहद सिंहों का अंकन है। इसके अतिरिक्त एक विलगित शिला पर त्रिछत्र बने हुए प्राप्त हुए है, जो कि संभवत: किसी प्रतिमा के पीछे का अथवा ऊपर का शिलाखंड रहा होगा। इसके अलावा, वहां एक शिलालेख पत्थर पर जैन तीर्थंकर की एक मूर्ति भी है। इसके अतिरिक्त मंदिर के एक स्तम्भ पर भी शिलालेख उत्कीर्ण किया गया मिला है। मंदिर के अंदर की मूर्तियां नष्ट हो गई हैं या शायद संग्रहालयों में स्थानांतरित कर दी गई हैं। मुखमंडप की छतों और गर्भगृह में पूर्ण विकसित कमल भी उकेरे गए हैं। इस मंदिर का निर्माण विस्तार से किया गया है और यह उस समय के कारीगरों के कौशल को दर्शाता है। ऐसा लगता है

कि काकती युग के दौरान इस मंदिर का जीर्णोद्धार या थोड़ा संशोधन किया गया था, क्योंकि, मंदिर के सामने, काकतीय शैली के स्तंभों का एक भव्य मंडपम अभी भी मौजूद है। इस मंदिर के सामने दिखाई देने वाली नाग की मूर्तियाँ राज्य गठबंधन शैली की मूर्तियाँ हैं। चालुक्य शैली में ४ और मूर्तियाँ उकेरी गई हैं। परिसर में कुछ और टूटी हुई नाग की मूर्तियाँ छिपी हुई हैं। पास ही यहाँ, राष्ट्रकूट युग के एक प्राचीन मंदिर के अवशेष भी हैं, जो संभवत: प्रारम्भ में जैन मंदिर था, किन्तु, बाद में इसे शिव मंदिर में बदल दिया गया, जिसमें काकतीय युग के त्रिकोण में खड़ी चतुर्भुज भैरव की मूर्ति अभी स्थापित है।

बैरनपल्ली से प्राप्त शिलालेख :-

बैरनपल्ली के जिनालय में ही दो अलग–अलग तिथियों के दो विधान शिलालेख मिले हैं।

प्रथम विधान शिलालेख :

मंदिर के सामने स्थापित पत्थर के प्रथम शिलालेख के अनुसार, बेक्कल्लु (बैरनपल्ली का नजदीकी नगर, तब बैरनपल्ली बेकल्लू नगर का ही भाग था) में जैन बसदि का नाम बिट्टाकुलथिलक जिनालयम है (कोलुनपाक में अंबरकुलथिलक जिनालयम की तरह)। इस जैन मंदिर में कल्याणी राजवंश के चालुक्य राजा त्रिभुवनमल्लादेव (विक्रमादित्य–६) के काल में, भुवनगिरी के एक दंडनायक बिरमाराड्डी और बेक्कल्लु के दो करणों ने जैन प्रतिमा स्थापित की थी (चालुक्य विक्रम– ३२, सर्वधारी संवत्सर वैशाख, शुद्ध पंचमी – बृहस्ततिवरम = ११०८ ईस्वी) और मंदिर की मरम्मत और तपस्वियों के भोजन के लिए आम के बगीचे के साथ–साथ भूमि भी दान की थी। इस शिलालेख में पुन्निगा तक रेवराड्डी राजवंश का विवरण है। "२४ गांवों के स्वामी, नांगुनुरु शासक रेव नयधेयु, उनके पुत्र विट्ठावमसादीपकुडु कनप्पा पंडिगा, उनके पुत्र जिनशासन दीपाकुडु पुन्निगा..." उल्लेखित है। शिलालेख में बीरासिरी, केतिकाब्बे, बीरानाडा, बीरामारुडु, प्रभु पुन्ना, अंकाकौडु बी, बल्लामपटला, रेविराड्डी इत्यादि नामों का भी उल्लेख है।

द्वितीय विधान शिलालेख :

दूसरे शिलालेख में ''बेक्कल्लु पुरवाराधीस्वरुडु मल्लाराड्डी'' की उपाधियाँ/शीर्षकों का उल्लेख है जैसे – ''श्रावकाभरण, सत्यरत्नाकरम, सम्यक्त्वचूड़ामणि, बिट्टाकुला तिलकंभोरासी, वर्धिवर्धन चंद्रमा'' आदि। यह भी लिखा है कि जिनदेव पूजानिमित्तम के लिए और जैन मुनियों के भोजन के लिए, जिसे उन्होंने अपने परिवार के साथ पवित्र किया था, कुछ दान मंदिर को और कुछ दान जैन आचार्य गुणसेन के संघ हेतु दिया गया था, जो यम, नियम, स्वाध्याय, ध्यान, मौन, अनुष्ठान, जप, समाधि और शील में समृद्ध थे। यहाँ एक तरफ दादा मल्लारेड्डी और दूसरी तरफ पोते मल्लारेड्डी का उल्लेख हैं। इतिहासकारों ने लिखा है कि दोनों एक ही हैं। लेकिन, उनके काल अलग–अलग हैं, विधायी संदर्भ अलग–अलग हैं।

बैरनपल्ली से हाल ही में प्राप्त जैन धरोहर :-

इस साल ही (२०२४) १० जून को बैरनपल्ली में एक जैन चौमुखा (सर्वतोभद्र) मूर्ति भी कुछ खोदने पर प्राप्त हुई थी। स्थानीय लोगों ने इसे तब खोजा था, जब अंगदी वीरन्ना जैन मंदिर के पास उन्हें मूर्ति के कुछ निशान मिले थे। तीन स्तरों में विभाजित इस जैन सर्वतोभद्र मूर्ति पर चारों तरफ तीर्थंकर वृषभ की ध्यान मुद्रा में मूर्तियाँ बनी हुई हैं। इतिहासकारों ने इस सर्वतोभद्र मूर्ति की पहचान १० वीं सदी के चालुक्य युग से की है। जिससे ये सिद्ध होता है कि इस वीरन्ना गुड़ी जैन मंदिर के निर्माण से पूर्व भी यही आसपास पहले भी

कोई जैन मंदिर रहा था, जो कि संभवत: नष्ट हो गया अथवा जमीन में दब गया – तभी ये चौमुख प्रतिमा पास ही की जमीन के अंदर से अनायास ही प्राप्त हुई है।

वर्तमान स्थिति एवं कर्त्तव्य :-

वर्तमान स्थिति सुखद नहीं है, जिनालय जीर्ण शीर्ण है, विभाग उतना ध्यान नहीं दे रहा है, मंदिर कभी भी गिर सकता है अथवा असामाजिक तत्व भी इसे नुकसान पहुँचा सकते है, सुरक्षा के अभाव में धरोहरों की चोरी भी यहाँ से संभव है। इसके अलावा, यहाँ कुछ ही महीने पहले एक जैन सर्वतोभद्र प्रतिमा जिनालय से कुछ ही दूरी पर ही प्राप्त हुई थी, तो और भी जिन प्रतिमाएं, मंदिर के अवशेष या धरोहर जमीन के अंदर दबी हो सकती है, उस पर भी शोध, उत्खनन आवश्यक है। यद्यपि तेलंगाना की नई इतिहास टीम ने यहाँ हाल ही में दौरा किया है, जिसमें क्षेत्र के जाने माने क्त या * इतिहासकार, पुरातत्वविद सम्मिलित है। ये टीम इस स्थल के एवं अन्य कई स्थलों पर शोध के नए आयामों को छूने का प्रयत्न कर रही है, इसके लिए सम्पूर्ण टीम साधुवाद और धन्यवाद् की पात्र है। किन्तु, धरोहर संरक्षण हेतु ये कुछ अधिक कर पाएंगे, कठिन लगता है। क्या हम भी तेलंगाना या आंध्र क्षेत्र में ऐसे परित्यक्त स्थानों को संरक्षित या बचाने के लिए कुछ कर सकते हैं? या हम स्थानीय प्रशासन या सरकार पर इन स्थानों को संरक्षित करने के लिए कदम उठाने का दबाव डाल सकते हैं? आखिरकार यह हमारी संस्कृति, विरासत और गौरव का प्रश्न जो है। हमें अवश्य ही ऐसे पुरातन जैन स्थलों के संरक्षण हेतु हरसंभव प्रयत्न करना चाहिए, और आने वाली पीढ़ियों के लिए अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को संजोकर रखना चाहिए।

प्रो. अनुपम जैन का व्याख्यान श्री लंका में

भारतीय गणित के उद्भट विद्वान तथा भारतीय गणित इतिहास परिषद के उपाध्यक्ष – प्रो. अनुपम जैन, पेराडेनिया विश्वविद्यालय, श्रीलंका के आमंत्रण पर 6 दिवसीय श्रीलंका यात्रा पर गये। वहाँ प्राचीन भारतीय गणित पर पेराडेनिया विश्वविद्यालय में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में आपका भारत की कतिपय अप्रकाशित पाण्डुलिपियों पर विस्तृत व्याख्यान हुआ। आपने लगभग 1 दर्जन गणितीय पाण्डुलिपियों एवं उनकी विषय वस्तु की जानकारी दी।

सम्पूर्ण सदन ने आचार्य श्रीधर कृत त्रिशतिका का पूर्ण पाठ सानुवाद शीघ्र प्रकाशित करने के विचार का अनुमोदन किया एवं यह दायित्व प्रो. अनुपम जैन को ही प्रदान किया।

भारत वापस आने पर माननीय कुलपति प्रो. राकेश सिंहई, विश्वविद्यालय के अधिकारियों, डाटा विज्ञान विभाग के

विभागाध्यक्ष–प्रो. गोविन्द माहेश्वरी तथा साथी प्राध्यापकों ने प्रो. जैन को इस भागीदारी हेतु बधाई दी।

- डॉ. सुरेखा मिश्रा

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी, मुम्बई
द्वारा आयोजित
व्यावहारिक सुझाव/निबन्ध प्रतियोगिता

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा आगामी शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष कार्यक्रमों की श्रृंखला में 2 प्रतियोगिताऐं आयोजित की जा रही हैं।

- **युवा वर्ग (45 वर्ष से कम) - व्यावहारिक सुझाव प्रतियोगिता, विषयः- ''तीर्थों का विकास कैसे हो?''**
  शब्द सीमा - 1,000 शब्द
- **प्रौढ़ वर्ग (45 वर्ष से अधिक) - निबन्ध प्रतियोगिता, विषयः- 'तीर्थों के सम्मुख चुनौतियॉ एवं समाधान'**
  शब्द सीमा - 3,000 शब्द
- दोनों वर्गों के लिए पुरस्कार अलग अलग हैं।
- प्रविष्टि भेजने की अन्तिम तिथि **30.09.26** हैं।
- प्रविष्टि ए-4 आकार के कागज पर कम्प्यूटर कम्पोज कराकर अथवा सुवाच्य हस्तलिपि में भेजी जानी चाहिए। केवल बाहर के पृष्ठ पर नाम, पता, फोन नं. लिखें, अन्दर कहीं न लिखें।
- स्त्री - पुरूष का कोई भेद नहीं है। भारत का कोई भी नागरिक प्रविष्टि भेज सकता है।
- भाषा हिन्दी या अंग्रेजी में से किसी भी भाषा में मान्य है।
- आयु के प्रमाण स्वरूप आधार कार्ड की छाया प्रति साथ भेजें। अथवा कोई अन्य प्रमाणपत्र जिसमें जन्मतिथि अंकित हो। आयु की गणना 31 मार्च 2026 को की जायेगी।
पुरस्कार राशि -	**प्रथम रु.**	:	**21,000.00**
दोनों वर्गों हेतु	**द्वितीय रु.**	:	**15,000.00**
अलग-अलग	**तृतीय रु.**	:	**11,000.00**
- **आवश्यकतानुसार सांत्वना पुरस्कार भी घोषित किये जा सकते हैं।**
- प्रविष्टि पंजीकृत डाक से भेजने का पता : - डॉ. अनुपम जैन,
  प्रधान सम्पादक - जैन तीर्थ वन्दना
  ज्ञानछाया, डी.14, सुदामा नगर
  इन्दौर 452009
  मोबा. 94250 53822, 95898 83822
- सभी विषयों में अध्यक्ष का निर्णय अन्तिम होगा।

जम्बूप्रसाद जैन
अध्यक्ष

संतोष जैन पेंढ़ारी
महामंत्री

जवाहरलाल जैन
चेयरमेन-शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष कार्यक्रम समिति

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की तीर्थ चक्रवर्ती योजना

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के 125 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में शतकोत्तर रजत स्थापना वर्ष समारोह के अवसर पर तीर्थक्षेत्र कमेटी को आर्थिक दृढ़ता प्रदान करने उद्देश्य की पूर्ति हेतु 1 लाख रूपए की राशि प्रदान करने वाले महानुभावों को तीर्थ चक्रवर्ती पद से सुशोभित किया जा रहा है। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी से सम्बद्ध तीर्थक्षेत्रों के संरक्षण] संवर्द्धन सुरक्षा तथा व्यवस्था को सुदृढ़ होना अत्यन्त आवश्यक है। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु अधिक से अधिक श्रावकों धर्म प्रेमियों तथा तीर्थ रक्षकों को तीर्थक्षेत्र कमेटी से मन से जुड़ने की अत्यधिक आवश्यकता है।

इन महानुभावों के द्वारा तीर्थ रक्षा हेतु 1 लाख रूपए का प्रदत्त अनुदान के संबंध में उन्हें तीर्थरक्षक चक्रवर्ती पद प्रदान कर सम्मानित किया गया। निश्चित ही प्राप्त राशि तीर्थों की रक्षा, विकास और व्यवस्थाओं लिए व्यय की जाएगी ऐसा आपको विश्वास दिलाते है।

तीर्थ चक्रवर्ती योजना कमेटी को आर्थिक रूप से सुदृढ़ तो बनाएगी ही साथ ही समाज के प्रत्येक वर्ग को तीर्थो की रक्षा और विकास से जोड़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन भी करेगी।

जो सज्जन अब तक निम्नलिखित 'तीर्थ चक्रवर्ती' पद सुशोभित कर चुके है उनका परिचय निम्न प्रकार से है

श्री जमनालाल जी - लक्ष्मीदेवी हपावत
मुम्बई

श्री दिनेश कुमार - संगीता सेठी
चैन्नई

श्री आर.के. - मैना जैन रानेका
इन्दौर

श्री विशाल जैन, आर्किटेक्ट
लखनऊ

भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी
धर्म चिह्न
मानस्तंभ
125 वर्ष – आस्था और संरक्षण का महापर्व!
22 अक्टूबर 2026 को 'भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी' अपने गौरवशाली सवा सौ साल पूर्ण कर रही है। सवा सौ साल पहले हमारे पावन तीर्थों पर अव्यवस्था का साम्राज्य था और मंदिरों में पूजा-प्रक्षाल की भी उचित व्यवस्था नहीं थी।
दानवीर सेठ माणिकचंद जी जैसे महापुरुषों की दूरदर्शिता ने 'तीर्थरक्षा' का जो दीप जलाया, आज उसी से हमारी संस्कृति सुरक्षित है। तीर्थों की वंदना ही 'जीवन-साफल्य' का मूलमंत्र है। सम्मेद शिखर जी जैसे पवित्र क्षेत्रों का संरक्षण हमारी विरासत बचाने के लिए अनिवार्य है।
आइए, इस ऐतिहासिक अवसर पर हम सब अपने तीर्थों की सुरक्षा और गरिमा बनाए रखने का संकल्प लें!
125 वर्ष
22 अक्टूबर 2026 - 22 अक्टूबर 2027
जम्बू प्रसाद जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
संतोष पेंढारी
राष्ट्रीय महामंत्री
जवाहर लाल जैन
चेयरमैन (शतकोत्तर रजत वर्ष)
22 अक्टूबर, मथुरा चलो
22 OCTOBER 2026
22 OCTOBER 2026

RNI-MAHBIL/2010/33592
Published on 1st of every month
License to post without prepayment -
WPP No. MR/Tech/WPP-90/South/ 2025-27
Jain Tirth vandana, English-Hindi August 2026
Posted at Mumbai Patrika Channel, Mumbai GPO Sorting Office
Mumbai-400001, Regd. No. MCS/160/ 2025-27
Posted on 16th and 17th of every month

With Compliments

From:

GUJARAT FLUOROCHEMICALS
VALUE THROUGH GREEN CHEMISTRY

GUJARAT FLUOROCHEMICALS LTD.

(Company of Siddho Mal-Inox Group)

INOX GFL GROUP
BEYOND INFINITY

Corporate office :
INOX Towers, 17, Sector 16-A,
NOIDA - 201 301 (U.P.)
Tel: 0120-614 9600
Email : contact@gfl.co.in

New Delhi Office :
612-618, Narain Manzil, 6th Floor,
Barakhamba Road,
New Delhi - 110 001
Tel: +91-11-23327860
Email : siddhomal@vsnl.net

Printer, Publisher and Editor UMANATH RAMAJOR DUBEY on behalf of BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004. Printed at TRIMURTI PRINTERS, 5/7 Dadarkar Building, V P Road, C P Tank, MUMBAI-400 004 . Published from BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN TIRTHKSHETRA COMMITTEE, Hirabaug, 2nd Floor, C P Tank, MUMBAI-400 004.